श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

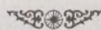
सम्पादकः पं० हरगोविन्दशास्त्री





जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक
चौखम्भा भारती अकादमी
आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

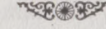
पुनर्मुद्रित : सन् २००८
मूल्य : रु. ४००.००

शाखा
चौखम्भा बुक्स
५ यू. ए. जवाहर नगर
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)
मलकागंज, दिल्ली-११०००७
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान
चौखम्भा विश्वभारती
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala
2



VAIJAYANTĪKOṢA

OF

ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index
by
Śrī Pt. Haragovind Śāstrī
Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY
VARANASI

Publisher
CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY
Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East
'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane
Varanasi-221001 (India)
Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)
+91-542-2332637, 2332702 (R)

Reprint Year : 2008

Also can be had from
CHAUKHAMBHA BOOKS
5. U. A. Jawahar Nagar
(Behind Jawahar Nagar Post-office)
Malkaganj, Delhi-110007
Phone : +91-11-23853166

Branch
CHAUKHAMBHA VISVABHARATI
Oriental Publishers & Distributors
K. 37/109, Gopal Mandir Lane
Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।
सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥
चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्रार्काग्निविलोचन ।
चन्द्रास्योमाचिताद्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्मार्जित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनिथोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्मार्जन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनिको सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मामें लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशयकष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥'

तथा—

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥'

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

'नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥'
(अग्निपुराण २३७।३–४)

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुघा ही बतलाया है। यथा—

'एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।'
(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

'यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।
स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥'

उपर्युक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

'नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।
नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥'

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-संचय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर (श्रवण) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों (ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैशद्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क (ई० पू० ७०० वर्ष) ने निघण्टुके भाष्यरूप 'निरुक्त' ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

'वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥'

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने 'एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः' आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औपमन्यव, ३ वार्ष्यायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैटिकी, ९ गालव, १० स्थौलाष्ठीवी, ११ क्रौष्टु और १२ कात्थक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। पं० श्रीभगवद्दत्तजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। (श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९)

लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध्य होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

(क) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध (पृ० ४) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनौषधि-सिंहादि-नृ (मनुष्य)-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने ······ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार		कोष
१. अमरसिंह	:	नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	:	नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	:	नानार्थध्वनिमञ्जरी
४ चक्रपाणि	:	शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	:	पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	:	नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	:	धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	:	नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	:	सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	:	निघण्टुराज (राजनिघण्टु)
११. नारायणदत्तकविराज	:	राजवल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	:	भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	:	एकाक्षरकोष
१४. ,,	:	द्विरूपकोष
१५. ,,	:	त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार		कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	:	हारावली
१७. भावमिश्र	:	भावप्रकाश
१८. मथुरेशपण्डित	:	शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	:	विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	:	नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	:	शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	:	आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	:	कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	:	वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	:	उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार	:	उणादिवृत्ति
२७. ,, ,,	:	,,
२८. हलायुधभट्ट	:	अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	:	अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. वोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा (२) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।[1]

(ख) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धौषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

---

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है। उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम		ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	:	अमरसिंह
२. कल्पद्रु	:	केशव
३. शब्दार्णव	:	दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	:	धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	:	पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	:	,,
७. एकाक्षरकोष	;	,,
८. द्विरूपकोष	:	,,
९. ,,	:	भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	:	महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	:	महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	:	महादेव
१३. विश्वप्रकाश	:	महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	:	,,
१५. नानार्थमञ्जरी	:	मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	:	यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	:	वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	:	वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	:	शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	:	शिवराम
२१. गणितनाममाला	:	हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	:	हलायुध
२३. शारदीनाममाला	:	हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	:	हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	:	,,
२६. अभिधानचिन्तामणि—नाममालापरिशिष्ट	:	,,
२७. लिङ्गानुशासन	:	,,

ग्रन्थ-नाम		ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोञ्छः		जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	:	मदनपाल
३०. मुक्तावली	:	श्रीधर
३१. रत्नमाला	:	दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	:	अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	:	अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	:	अप्पयदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	:	अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	:	कालिदास
३७. शब्दार्णव	:	काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	:	केशव
३९. लोकप्रकाश	:	क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	:	गदसिंह
४१. शब्दमाला	:	गोपीनाथ
४२. नामावली	:	गोवर्धन
४३. शब्दसागर	:	गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	:	चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	:	जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	:	जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	:	तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	:	त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	:	दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	:	दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	:	देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	:	धरणीश
५३. कविजीवन	:	धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	:	नत्किरकवि
५५. वर्णाभिधान	:	नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	:	नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	:	नारायणदास
५८. रत्नकोष	:	नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	:	पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम		ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला	:	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन	:	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष	.	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका	:	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय	:	बाह्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष	:	बिल्हण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु	:	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला	:	भोजराज
६८. मङ्खकोष	:	मङ्ख
६९. शब्दरत्नावली	:	मथुरेश
७०. पदचन्द्रिका	:	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक	:	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर	:	,,
७३. एकाक्षरनिघण्टु	:	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी	:	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला	:	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय	:	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु	:	राम
७८. उणादिकोष	:	रामशर्मा
७९ शब्दमाला	:	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला	:	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु	:	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु	:	वररुचि
८३. कविमञ्जरी	:	वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर	:	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु	:	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि	:	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु	:	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि–प्रमोदक	:	,,
९०. दशदीपनिघण्टु	:	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम		ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला	:	शङ्कर
९२. शिवकोष	:	शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष	:	श्रीहर्ष
९४. श्लेषार्थपदसंग्रह	:	,,
९५. एकाक्षरनिघण्टु	:	सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश	:	सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका	:	सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर	:	सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक	:	सोमभव
१००. एकार्थनाममाला	:	सौभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला	:	,,

अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि[1]	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल[2]	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन[3]
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। (द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२०)

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।

१३२. सोमनन्दी
१३३. सज्जन
१३४. साहसाङ्क
१३५. हट्टचन्द्र
१३६. हर
१३७. कात्यायन

अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला[1]
१३९. असालतिप्रकाश
१४०. आनन्दकोष
१४१. एकवर्णसंग्रह
१४२. एकाक्षरकोष
१४३. उत्पलिनी
१४४. ऊष्मविवेक
१४५ अजय
१४६. अरुण
१४७. इन्दुकोष
१४८. कल्पतरुकोष
१४९. ग्रहाभिधान
(दैवज्ञमुखमण्डन)
१५०. जकारभेद[2]
१५१. दण्डिकोष
१५२. सुभूतिकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु
१५४. नक्षत्राभिधान
१५५. देशीकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी
१५७. नामनिधान
१५८. पद्मकोष
१५९. भ्रमकोष
१६०. चकारभेद
१६१ बीजकोष
१६२. बृहदमरकोष[3]
१६३. महाखण्डनकोष
१६४. पदरत्नावली
१६५. राजकोषनिघण्टु
१६६. पुद्गलकोष
१६७. लिङ्गप्रकाश
१६८. मुनिकोष
१६९. वर्णप्रकाशकोष
१७०. पालकोष
१७१. वात्स्यायनकोष
१७२. कोषसार
१७३. शब्दतरङ्गिणी
१७४. गङ्गाधर
१७५. शब्ददीपिका
१७६. गोवर्द्धनकोष
१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१७८. शब्दसारनिघण्टु
१७९. चन्द्रकोष
१८०. संसारावर्त
१८१. चरककोष
१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१८३. सकारभेद[4]
१८४. सञ्जीवनी
१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं।
२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं।
३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु
१८८. साध्यकोष
१८९. रत्नकोष
१९०. सारस्वताभिधान
१९१. हनुमन्निघण्टु
१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

(ग) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है (पृ० ६३४)। इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहास-में (पृ० ६३३) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियों-में 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है। उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष (उक्त इति० पृ० ६२०) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी (वही इतिहास पृ० ७७७–७७९)।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है। इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है। इनका समय शक ८५३ (ई० ९६९) है। इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। (गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१)।

आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की। आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये 'तामिलनाड' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे। पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शाङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है। एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्'में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादवप्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय'नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्जीवरम्'में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य कोषोंके प्रमापक वचनोंका उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषातिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष	:	कर्नल जी० ए० जाकोब
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष	:	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका	:	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी	:	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह	:	
७. कोषावतंस	:	राघवकवि
८. तिङन्तार्णवतरणि	:	
९. धर्मकोष	:	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान	:	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष	:	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष	:	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष	:	
१४ वाङ्मयार्णव	:	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम्	:	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम	:	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष	:	
१८. देशीनाममाला	:	हेमचन्द्राचार्य

वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पातालकाण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्वयक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशोंका ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निर्वैश्वानरः·············' (१।२।१४) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि, काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाह्य(चिता)ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः············' (३।५।२) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते··············'(३।४।६४) से 'गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' (३।५।१०८) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीविकादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नौस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अभ्रावकाशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिव्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। (३।६।१२५—१४९)

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः·············क्रिमिरः, सितलोहितः' (५।३।१०–५।३।२५) द्वारा श्वेतादि वर्णोका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों (रङ्गों) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो··········(५।३।२५)से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक (दो, तीन, चार और पांच) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों (स्वादों) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' (५।३।४५) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है ।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है ।

आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले (लगभग २२५ से भी अधिक) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाचंयमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है । कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका । संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा । मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है ।

आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया । फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया । उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया । इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्वर्गने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया । ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे ।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्वर्गकी सद्भावना एवं सहानु-भूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी । उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है ।

प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धरण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी । इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, ब्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका । किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की । जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी । अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है । लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है । पाठकोंको इससे अधिक सौविध्य प्राप्त होगा । सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सौभाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास करूँगा।

आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूं, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चौखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादनकालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल (चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विट्ठलदास गुप्त)को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्नियन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्तिवश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

'नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न
वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम्।
ततो बुधा आददते गुणान् हि
हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात्॥

तथा—

'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥'

इति शम्॥

'गोविन्द-कुटीर'
केसठ (शाहाबाद)
हरिप्रबोधिनी ११
सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—
मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री

विषय-सूची

॥ श्रीः ॥

वैजयन्तीकोषः

अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।
ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरूणां गुरवे नमः ॥ १ ॥
प्रकाश्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।
वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥
स्त्रीपुन्नपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।
नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥
समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।
लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥४॥
यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।
विशेषविधितः क्वापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥
स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।
षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥
त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥
ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् क्वचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।
एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥
इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।
प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥
सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।
समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥
न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १०½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

१. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।
सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।
देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।
आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ॥ ३ ॥
सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।
बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥
अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्दैवतं देवता स्त्रियाम् ।
त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥
आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।
ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥
शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।
परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥
पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।
वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्ब्राह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥
विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिककुद्विष्टरश्रवाः ॥ १० ॥
पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।
श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गी श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो द्रुणः ॥११॥
वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।
अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥
मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिरधोऽक्षजः ।
अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥
शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।
कालकुन्थो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥
पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।
कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥
आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥
कौस्तुभोऽस्य मणिर्लक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।
चापः शार्ङ्गं पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ १७ ॥
कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।
अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।
आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुक्रमः ॥ १९ ॥
विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।
राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥
दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।
राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥
पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।
रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥
बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।
तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥
भद्राङ्गो भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।
बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥
सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।
दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥
शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।
वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥
प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥
पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।
शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥
बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।
ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्यादृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥
अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।
अश्वो हयशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥
दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।
कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥
पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।
बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।
षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥
मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।
शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥
गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हंस्त्रिकालदृक् ।
अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥
लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदसुतेन्दिरा ।
रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाम्बुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥
गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।
सुपर्णीतनयस्तार्क्ष्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥
पन्नगारिर्विष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।
महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥
शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।
महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥
कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।
ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥
व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।
शूली दक्षाध्वराराातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥
कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलग्रीवस्त्रिलोचनः ।
गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥
भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।
भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्दृगायुधः ॥ ४३ ॥
कटाटङ्को जटाटीरो जटाझाटो महानटः ।
झिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥
स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।
कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥
खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।
उग्रः कटप्रूर्दिग्वासा झाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥
बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।
ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥
स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।
काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घुणः ।
पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥
प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।
अथ कूश्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥
भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।
वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥
वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।
लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥
द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।
कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥
महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।
वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिवाहनः ॥ ५५ ॥
स्वामो गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।
षाण्मातुरः कार्त्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥
सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।
अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥
उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।
आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥
भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।
अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥
बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।
सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥
कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।
एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥
दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।
यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥
विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।
चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥
कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंह्यपि ॥ ६४ ॥
कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः । ६४½

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्च्यवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।
वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥
वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥
संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।
पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥
कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।
स्वाराड्ऋभुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥
भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।
परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥
आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।
खदिरो माहिरो दाल्मिः शचीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥
गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।
महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥
वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।
सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥
जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।
प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥
अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।
अश्वोऽस्य वृषणश्वः स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥
क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।
पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥
ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।
ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥
अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।
व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥
वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्त्मा समन्तभुक् ।
जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥
दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्व उषर्बुधः ।
शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदर्चिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥
हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।
कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः स्रुग्जिह्वो हव्यवाहनः ।
आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वातसारथिः ॥ १७ ॥
बर्मिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्विश्चतिरश्चतिः ।
जागृविः सहुरिः सद्भिर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥
स्तृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराघोषिराशिराः ।
तेजोऽप्पित्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥
स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुरस्तु तुषानलः ।
छागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिरंमदः ॥ २० ॥
कुद्यग्निर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।
सहरक्षा दवो दुध्रस्तार्णे क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥
क्रव्यात्तु प्रेतदाहाग्निर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।
सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥
अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।
शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥
गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।
शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽग्निर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥
सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।
पृथिक्कृद्वत्र्महोमेषु पदहोमेष्वनीकवान् ॥ २५ ॥
आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।
ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः ' सवनाहुतौ ॥ २६ ॥
महिमांस्तु विवाहग्निर्वैश्वदेवाग्निरद्भुतः ।
व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥
सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।
धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥
शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृस्त्रियोः ।
झलका तु महाज्वाला प्रवर्ग्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥
सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।
धूम्रवर्णा विश्वरुचिर्लोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥
त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुञ्जो ना खट्वाङ्गश्चाथ संज्वरः ।
सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥
दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।
अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाग्निविट् ॥ ३२ ॥
भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥
यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।
सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥
कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।
धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥
पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।
पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥
नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥
नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।
प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥
यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।
स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥
अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।
रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥
कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।
अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्कव आशराः ॥ ४१ ॥
अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरानतः ।
दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥
लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।
चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥
अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।
इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् प्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥
वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।
अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥
प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।
जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥
वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।
गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥
युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।
दैत्यदेवो वहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥
आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।
मरुद्धूलिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।
नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥
सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।
मृदुवातश्चिञ्चिलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥
मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।
खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोभञ्झानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥
पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।
गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥
जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।
गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥
रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।
कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥
मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।
कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥
निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।
राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥
एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।
इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥
अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।
भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।
स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥
गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।
भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥
किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।
गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥
विद्याधरास्तु द्युचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।
पिशाचः स्यात्कापिशेयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥
देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।
नासत्यदस्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥
आश्विनेयौ यज्ञवहौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।
नासिक्यावाश्विनौ दस्रौ विश्वकर्मा द्युवर्धकिः ॥ ६ ॥
त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।
सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥
रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।
तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥
मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशात्रवः ॥ ९ ॥
पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।
ईदृङ्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥
स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।
सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥
मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।
महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥
तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।
मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥
पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

---

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।
वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥
तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।
दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णी हरिद्देववधूः सरिः ॥ २ ॥
अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।
क्रमात् पूर्वादिदिङ्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥
लोकपालास्ततो प्राच्या दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।
आग्नेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥
मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षाप्यपराजिता ।
कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥
ब्राह्मी तूर्ध्वाऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।
दिङ्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥
दिङ्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।
अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥
ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥
करिण्योऽभ्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।
ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥
अर्कः सूर्योऽर्यमा सूरो द्वादशात्मा दिवाकरः ।
मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥
सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।
द्युमणिर्हरिदश्वोऽद्रिरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥
द्युमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्पतिः ।
भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥
रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवनुः ।
तर्षुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥
पासिर्द्दशानो रात्रिद्विट् प्रभाकरविभाकरौ ।
खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥
चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।
आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषडम्बरः ॥ १५ ॥

घृष्टिपादमयूखांशुसान्ध्योद्योगंगभस्तयः ।
किरणोस्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥
तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।
शतत्रयं हिमोत्सर्गे तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥
आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥
ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।
अथ मेष्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥
हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।
ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥
अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।
घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माध्व्यः शक्रय इत्यपि ॥ २१ ॥
आलोकस्तु प्रभा भा रुग्रुचिदीधितिदीप्तयः ।
अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥
संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।
त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विश्रुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥
हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विधुः ।
परिज्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥
पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।
ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥
ह्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।
यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥
प्राचीनतिलको जर्णो व्याध्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।
उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥
चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।
चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥
अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥
परिग्रहोपरक्तौ तु ग्रस्तार्केन्द्वोरथ ग्रहे ।
उपप्लवोपरागौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥
गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्वोः परिधिः परिवेषकः ।
कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥
कर्षको रुधिरो भौमः प्रव्याल्गोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥
वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।
गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥
प्रचक्षा दीदिविश्चाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।
तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥
मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।
सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥
श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।
स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥
राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कृशाः ।
धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥
तारा भं रात्रिजं धिष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडु र्न ना ।
मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥
इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इल्वला मताः ।
योग्यः सिध्यश्च पुष्य(ः)स्यादामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥
निष्ट्या स्वाती विशाखे तु राधे आर्द्रा तु कालिनी ।
श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलबर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥
मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।
ज्येष्ठा ज्येष्ठघ्नी स्यात्प्रोष्ठपदाः पुंस्त्रियोः सभाद्रपदाः ॥४१॥
अश्विन्यौ वालिन्यावश्वयुजावाश्वकिन्यौ च ।
यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥
अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूम्नि स्त्रियश्च ताः ।
फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥
अनूराधास्तु पुंभूम्नि शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।
वीथ्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥
त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥
दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।
रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्ततस्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥
मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।
हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्गवी परा ॥ ४७ ॥
मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।
श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि।
ऐरावतं जारद्गवं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४९ ॥
सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः।
ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ५० ॥
पूर्वपश्चिमराश्यर्धौ सन्दालवलयौ क्रमात्।
संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ५१ ॥
कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्त्रुटिः।
द्वे तुटी लघ्वक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ५२ ॥
तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव।
ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५३ ॥
लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः।
तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५४ ॥
त्रिंशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः।
दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५५ ॥
पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम्।
रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५६ ॥
तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा धारिर्विभावरी।
तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५७ ॥
निशीथिनी निशीथ्या च ज्यौत्स्नी ज्योतिष्मती निशा।
पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५८ ॥
बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः।
पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५९ ॥
तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपन्ना च राजसी।
खण्डिता चेति शर्वर्यः प्रावृडाद्यृतुषु क्रमात् ॥ ६० ॥
या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे।
सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैमरथी हि सा ॥ ६१ ॥
ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः।
आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ६२ ॥
परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत्।
छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६३ ॥
अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च।
दिनादौ प्राह्णपूर्वाह्णौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६४ ॥
मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छूरस्तु विकालकः।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६५ ॥
साम्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः।
मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६६ ॥
ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ।
पुण्याहमह्नि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६७ ॥
विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः।
व्युष्टं विभातं प्रत्यूषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६८ ॥
काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः।
तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६९ ॥
पक्षतिश्चाथ पाटूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी।
निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शोऽमावास्यमावसी ॥ ७० ॥
अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामंस्याऽप्यमामसी।
सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ७१ ॥
पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना।
पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ७२ ॥
चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते।
पर्वणी पञ्चदश्यौ द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७३ ॥
आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी।
पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७४ ॥
फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा।
विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७५ ॥
आषाढी कृत्रिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी।
अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७६ ॥
वत्सरान्ता त्वरिश्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी।
मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७७ ॥
महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात्।
जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७८ ॥
पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः।
क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७९ ॥
अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात्।
मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ८० ॥
ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया।
आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ८१ ॥

सहस्ये स्यु स्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।
शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥
तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।
चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राध उच्छुनः ॥ ८३ ॥
ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।
ते शुक्रे स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥
श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।
अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥
कार्त्तिके स्यात् कार्त्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।
क्लीबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥
हेमन्तः प्रसवो लोध्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
मधुर्वसन्तः सुरभिर्बलाङ्कः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥
पुष्पकालोऽपीष्ममस्त्री ग्रीष्मस्त्वाखोर ऊष्मकः ।
शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥
प्रावृड् वार्षी भूम्नि वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।
घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥
उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।
संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥
वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।
कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्नेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥
द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो झर्झरकः कलिः ।
त्रियुगं तु युगासारं द्व्यायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥
मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।
चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥
तद्रात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।
महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥
प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः । ९४½

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-
मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्घनः ।
धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥
तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।
कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥
इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तद्दीर्घमृजु रोहितम् ।
ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥
आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।
क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिद्दीप्ता शतह्रदा ॥ ४ ॥
सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।
गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्रादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥
वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशनिर्न षण् ।
स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशनिर्न षण् ॥ ६ ॥
वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्रयम्भसः कणः ।
घनोपलस्तु करकः पुञ्जिका मचटीति च ॥ ७ ॥
विप्रुट् स्त्री पृषतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।
अनावृष्टिरवग्राहो मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥
अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥
कुहिढोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ ९½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।
पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥
विहङ्गमो विर्विहगो विहङ्गो नभसङ्गमः ।
नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भसन् ॥ २ ॥
वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।
ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥
शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।
पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥
गृह्याश्छेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।
हंसो मरालो नीलाक्षश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥
मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।
सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥
क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।
मलिनैर्मल्लिकाक्षस्तैर्धार्तराष्ट्रः सितेतरैः ॥ ७ ॥
कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।
वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥
हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।
चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥
बको बकोटः कह्वोऽथ बलाका बिसकण्ठिका ।
बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥
मद्गुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।
कारण्डवो महापक्षो जलरङ्कुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥
दात्यूहश्चाथ शकटाबिले प्लवपरिप्लवौ ।
अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुक्कुटौ ॥ १२ ॥
कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।
कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥
मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।
पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।
आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥
बलिपुष्ट उलूकारिर्नाडिजङ्घोऽप्रहृष्टकः ।
धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥
द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्क्षः करट इत्यपि ।
कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रिः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥
धूङ्क्ष्णा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।
बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥
कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।
व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥
श्येनायां प्राचिका चित्रपक्षो शारुकपिञ्जलौ ।
वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥
कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।
उलूकचेटी हिक्का स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥
उलूकः पेचकः कोण्ठः काकारिर्हरिलोचनः ।
नक्तञ्चरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥
महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।
कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥
मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुप्तोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।
गोलत्तिका खञ्जरीटी शाङ्गः कीर्शो च पिप्पिका ॥ २४ ॥
शुकस्त्रिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।
दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥
पात्रं तु कुण्डृणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।
काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥
वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।
भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥
मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।
आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥
किकिदीविः स्वर्णचूडश्चाषो राजविहङ्गमः ।
मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥
गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।
दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥
कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मञ्जकः ॥ ३१ ॥
पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।
चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥
सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।
दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥
क्रौञ्चस्तु कुङ्कथोत्क्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।
टिट्टिभस्तु कटुक्काण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥
तित्तिरिस्तु खरक्काणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।
चकोरस्तु चलच्चञ्चुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥
कृकरे त्वथ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।
मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावलः ॥ ३६ ॥
वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।
भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥
मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्किरो नर्तनप्रियः ।
मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीर्ति च ॥ ३८ ॥
शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।
शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥
पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णीयकवर्तकाः ।
लावकुक्कुटहारीतजीवञ्जीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥
हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।
वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥
भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिण्मधुपालिनः ।
अलिर्द्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥
इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।
शिलपुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥
जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।
मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥
चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।
अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥
कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।
गण्डोली वरटा न क्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥
अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।
निशामणिर्ध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी झीरिका चीरी झिल्लिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।
पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥
छदः पत्रो गरुद्वाजश्छदनं च तनूरुहम् ।
पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः सृपाटिका ।
डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥

शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।
निर्ह्रादो रवणो नादो क्ष्वेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥
कणिर्ह्रादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।
गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥
कूजनं कूजितं गर्जो न क्लीबे गर्जना न ना ।
क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥
रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।
वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्क्षो स्त्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥
घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।
तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥
बुक्कनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।
वृकस्य रेषणं रेषा ह्रेषा ह्लेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥
बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।
काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥
डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।
पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥
विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।
प्रणादस्त्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥
स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।
मार्जना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्दलध्वनौ ॥ १० ॥
वाणं हुडुक्कहिक्कायां भेरीनादे तु टट्टरः ।
क्वणनं क्वणितं क्वाणो निक्वाणो निक्वणः क्वणः ॥ ११ ॥
वीणायाः क्वणतेः प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः ।
स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥
गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।
समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥
अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।
एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥
कलहस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥
शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।
सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥
अनिर्बद्धं तूच्चावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।
अनृते वितथालीकावाहतं तु मृषार्थके ॥ १७ ॥
अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।
कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥
छलवाक्तु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।
क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥
निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।
विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥
निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।
अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥
आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।
अर्राणन्तो मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥
सम्भापणं त्वाभावणमालापः कुरुकुञ्चिका ।
उपसम्भाषणं साम्नि तत्तूपच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥
धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।
विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥
आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।
संवादनं वाचिकं च वलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥
लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।
भञ्जना स्याद्विवरणे पोटला तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥
कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।
चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥
उद्धूमस्तु कौरकव्या विगर्वा गर्वहारिका ।
लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।
काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥
प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्नवः ।
अपव्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥
हक्कारामन्त्रणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ।
अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशंसनम् ।
शापोऽधिक्षेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥
अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरूक्षणम् ।
क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥
जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।
आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुनं प्रति ॥ ३४ ॥
उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।
श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥
यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।
ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥
अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।
अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥
कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।
इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥
वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहूदितम् ॥ ३९ ॥
विकल्पना प्रथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यानिह्नुतिः ।
समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥
उपोद्घात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।
प्रस्तावः पुनरुद्घातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥
गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।
शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ८ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

---

३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।
क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्ष्मा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥
धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।
वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥
ग्मा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।
अब्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥
अचला कीलिनी पेरा बीजसूः रत्नसूः स्वसूः ।
रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्वर्यवनिरुर्वरा ॥ ४ ॥
द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।
नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥
तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।
हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥
इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।
भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥
वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।
उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥
ततो हिरण्मयं श्वैतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।
कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥
जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।
लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥
प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।
मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥
अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।
एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥
मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।
अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥
अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥
अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधि ।
पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥
मलयद्वीपमब्धौ स्याद्दक्षिणे तच्च दार्दरम् ।
मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥
अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।
यतः पुरो रक्तवहो लौहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥
अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।
यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥
बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।
पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥
अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।
इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥
नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूम्नि च ।
स्त्रियो वरेन्द्री स्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥

प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।
उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥
आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥
गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुष्कराः ।
सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥
मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।
लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥

जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।
प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥
टर्कवाह्लीककाश्मीरतुरुष्केषु ससिन्धुषु ।
बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥
कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।
अप्यन्ये पारदाः किञ्जाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥
अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्गरकाः कुजाः ।
प्राग्ज्योतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥
विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्रावस्ती तु परञ्जका ।
राढा तु सुह्माः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्ष्मणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।
वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताःसाल्वा इत्याद्या नीवृतःपृथक् ।
विन्ध्यात्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥
तत्र पाण्ड्याःपाण्डियाःस्युःकुन्तलाःस्तूपहालकाः ।
चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥
अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।
इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥
अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।
अथेमे मलदाद्याख्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥
तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करूशास्तु बृहद्गृहाः ।
त्रैपुरास्तु डहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥
दाशार्णाः स्युर्वैदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।
अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥
अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।
साल्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषा त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥
उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।
हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् साल्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥
अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।
मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥
पटच्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।
उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥
मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।
कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नानाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥
पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।
शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥
सनलो नड्वलो नड्वाञ्छार्करः शर्कराधिकः ।
देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥
कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृत् ।
अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥
स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वांस्तु सुराजनि ।
अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥
स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।
पद्यः पदाङ्कयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।
शतमूर्धा वामलूरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।
सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥
विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।
अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥
वृतिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।
संक्रमस्तित्तिरिस्तुल्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥
जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।
अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥
धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।
दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥
किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।
बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्रत्निर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥
अरत्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।
कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥
अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।
तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्राकचिकोऽपि च ॥५६॥
हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।
चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥
ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।
अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥
दशहस्तः पितृनल्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।
स प्रादेशनिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥
निवर्तनं तु तिसृभी रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।
नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥
दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।
दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥
धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।
स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥
गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।
गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः क्ष्माभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।
अहार्यगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥
बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।
सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुच्च सः ॥ २ ॥
लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।
मलये त्रिकलापाढो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥
हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।
माल्यवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥
रजताद्रिस्तु कैलासो हराद्रिर्महितश्च सः ।
वैकुण्टो वृषभः सिंहः केसरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥
उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।
दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥
उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे झरनिर्झरौ ।
स्नुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥
कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।
पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृषत् ॥ ८ ॥
गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।
उपत्यका त्वधोभूमिर्गिरेरूर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥
कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृतान्तरे ।
आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥
गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।
रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥
करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।
शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥
शुक्लधातौ पाकशुक्ला कठिनी कक्खटी खटी ।
हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥
तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्वरम् ।
सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥
बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥
शिलाजतु तु गौरेयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।
सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥
आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।
सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥
रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।
चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥
लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।
दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥
अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।
जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रियौ ॥ २० ॥
वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।
सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥
रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।
अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥
रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।
रजतं त्रापुषं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥
सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।
ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥
म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।
रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥
लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।
राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥
काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।
मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥
गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।
कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥
घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।
सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥
यवनेष्टं समोल्लकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।
त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥
रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृद्वङ्गं नागजीवनम् ।
परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।
गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥
अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।
धीवरं धीमकं लोहं लोहकालदृढानि च ॥ ३३ ॥
स्त्री कुटिनी पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।
अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रूक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥
वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।
रसकस्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५
धूर्तमण्डूरसिंहाणत्रिष्टाख्यानि त्वयोमले ।
लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिर्न पण ॥ ३६ ॥
स्फटिकोऽर्को रविग्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।
चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुधामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥
अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चुम्बकभ्रामकादयः ।
गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥
शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।
विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥
इन्द्रनीलं महानीलं वैडूर्यं वालवायजम् ।
कुरुविन्दास्तु कुल्माषा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥
माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।
रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥
स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।
तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥
रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
तुत्थं तु दार्विका क्वाथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥
कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।
रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥
हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।
कद्यकं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥
महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।
कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने अपि ॥ २ ॥
तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।
सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥
पुष्पवाटी त्वमात्यादेस्त्वर्थी वाटी फलाय चेत् ।
वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुर्विटपी विष्टरोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥
अनोकहो नगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।
वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रूक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥
वानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।
ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥
अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।
गुल्मिन्यपि च वल्ली तु व्रततिर्व्रतती लता ॥ ७ ॥
बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।
पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥
फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।
उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥
फलमामं शलाटुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।
त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कूरमस्त्रियौ ॥ १० ॥
प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।
परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥
शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।
मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम्॥१२॥
स दारुमात्रः स्थाणवस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।
छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न क्ली वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥१३॥
चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।
निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥
स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।
स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।
छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥
पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।
पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥
पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।
मणीचकं प्रसूनं च सूनं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥
मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।
कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥
गुच्छो गुलुञ्छः स्तबको मञ्जर्यां मञ्जरिर्वल्लरी ।
प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥
षण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।
हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥
आश्वत्थमैङ्गुदं प्लाक्षं नैयग्रोधं च बार्हतम् ।
वैणवं शैग्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥
जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।
विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥
सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।
सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥
आम्रे कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।
करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥
अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।
केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥
द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ।
श्रीवृक्षे पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥
उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।
प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥
पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।
आस्फोतो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥
बिल्वे मालूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।
परिव्याधे बालभीरुर्भीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥
शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वञ्जुलो वेतसो रथः ।
विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥
मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।
बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥
देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुक्कुटी ।
अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥
छागे तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥
नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।
त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्नकः ॥ ३६ ॥
न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।
महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥
विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्व्याघ्रपाच्च मधुच्छदः ।
सर्जेऽश्वकर्णः साले तु कार्ष्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥
पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।
रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥
रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।
स्त्रीप्रिये वञ्जुलोऽशोकः कङ्केलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥
हेमपुष्पोऽप्यथाङ्कोले निचोलोऽङ्कोढशोधनौ ।
रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥
दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।
उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥
राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।
मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥
गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।
पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥
भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मिचर्मिकौ ।
पीलौ गुडफलः स्रंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥
अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।
चित्रकृत् तिमिशो नेमी वञ्जुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥
सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।
कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥
काञ्चनारोऽप्याग्र्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।
आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽग्र्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।
पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥
विचुलः पिचुलो राढः कैडर्यो विषपुष्पकः ।
काकर्दश्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥
कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।
काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥
सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।
तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥
गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।
श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥
कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोलूखलकं वरम् ।
रज्जुदाले नीचुदारः कच्छूदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥
गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।
उद्दालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥
शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।
उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥
गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।
काश्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काश्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥
श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।
कैडर्यं कट्फलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥
सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।
ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥
कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।
महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥
वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।
शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥
करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चिरिबिल्वकः ।
कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥
बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।
सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥
मरुद्रुवे विट्खदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।
कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।
गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥
प्रियके तु प्रियङ्ग्वाख्या कारम्भा फलिनी फली ।
विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोवन्दिनी लता ॥ ६६ ॥
भावज्ञा सर्षपी स्त्र्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।
कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥
स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।
मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लूकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥
भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्टुण्टुक आरलुः ।
तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥
कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।
किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥
पारिभद्रे द्रुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।
पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥
वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।
कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥
कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।
एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥
पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।
कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥
निम्बे पार्वतकैडर्यद्वेषिच्छर्दनमाथिकाः ।
रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिकुचो डहुः ॥ ७५ ॥
पिचुले झावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।
उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥
धूर्धूरः काञ्चनाह्वोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।
प्रेतालये तु तित्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥
कृसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।
पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥
पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।
एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥
चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।
षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥
तिन्तृडीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।
तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।
हीने त्वञ्जिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥
करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।
व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥
शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।
वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥
वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।
तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको द्रुमः ॥ ८५ ॥
अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।
गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥
कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिञ्छे काकतुण्डिका ।
बदर्यां कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥
लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।
हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥
जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।
सृगालकोलौ हिंस्राऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥
काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।
आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥
काष्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।
रोचनः शिंशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥
कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।
जम्ब्वां त्रिसारा विरजा महाजम्ब्वां महाफला ॥ ९२ ॥
सुरसाथो राजजम्ब्वां सुफलः सुरभिच्छदः ।
काकजम्ब्वां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥
जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्यां श्लक्ष्णपत्रकः ।
शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥
भल्लातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुष्करः ।
कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥
सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।
वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥
धातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातृपुष्पिका ।
स्नुह्यां समन्तदुग्धा स्नुग्वज्रा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्गुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।
वश्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ९८ ॥
तुण्डिकेर्यां रवा शीरा केसरा बदराफला ।
कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ९९ ॥
विषघ्न्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्ठा ब्राह्मणयष्टिका ।
ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपर्ण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥
कोकिलाक्षस्तु काण्डेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।
वासके त्वाटरूषः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥
वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।
वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥
गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।
हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला दद्रुनाशिनी ॥ १०३ ॥
बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।
लताबृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥
निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।
कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥
दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।
दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥
हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥
कालमेष्यां कृष्णफला वागूची वसुवल्लिका ।
सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवल्गुजः ॥ १०८ ॥
पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।
रेवत्यां रामदूती स्याद्वारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥
श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।
ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥
फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।
दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्ठा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥
काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।
तृड्घ्न्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥
प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥
देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।
मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।
अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥
अजशृङ्ग्यां विषाणी स्याद् गोजिह्वादार्विके समे ।
शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥
वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुन्माला लता मरुत् ।
कच्छूरके द्राविडकः कालयको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥
निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।
कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥
सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्र तु ।
सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥
अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।
अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥
तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।
अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥
कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।
मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥
पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।
विष्णुक्रान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥
ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।
सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥
मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रामणी बुधा ।
रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥
यासो यवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥
सर्पदंष्ट्र्यमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।
वाटपुष्प्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥
वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।
अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥
ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥
अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहनोऽपि च ।
एकाष्ठीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा।
गुडूच्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥
वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा।
जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥
दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः।
गवाद्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छ्रेण्यपराजिता ॥ १३३ ॥
विष्णुक्रान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु।
श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥
नीलायां तु महाश्वेता निष्टयान्ता स्थूलपुष्पिका।
जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥
पृश्निपर्ण्यां पृथक्पर्णी लाङ्गूली पदपर्णिका।
गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥
सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला।
नागर्यां केशिका त्र्यश्ना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥
रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु।
कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥
गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका।
ज्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥
पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्कली।
नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥
क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः।
गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥
श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्यां तु शतमूली शतावरी।
इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥
सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि।
जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥
चर्मपर्ण्यां तु शार्ङ्गेष्ठा सुताह्वायामुपोदिका।
ब्रह्मयां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥
मण्डूकपर्ण्यां भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि।
शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥
पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कठिल्लका।
श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥
अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी।
तुण्डिकेर्यां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी बदर्यञ्जलिकारिका।
गण्डकाली खदिर्यां तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥
कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा।
पट्टुश्रिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्कुटौ ॥ १४९ ॥
निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः।
मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥
मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे।
विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥
लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः।
जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम्।
छत्राकश्च सिलिन्ध्रश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥
सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः।
प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥
हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण्।
नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥
मत्स्याद्यां शालशालीनौ पत्तूरो लोहमारकः।
अगस्त्ये मुनिमार्जारावगस्तिर्वङ्गसेनकः ॥ १५६ ॥
शुकनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः।
कपित्थपर्ण्यधःपुष्पी व्रणघ्नी झरसी झरा ॥ १५७ ॥
प्रपुन्नाडे त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दनः।
घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥
जाली पटोली झण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु।
पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥
ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः।
अथ जिङ्गी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥
बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका।
कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥
महाजाली पीतघोषा क्ष्वोडो धामार्गवोऽपि च।
हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे स्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥
चाङ्गेर्यां चुक्रिका दन्तशाठाम्बष्ठाम्ललोण्यपि।
सुषव्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।
सुगन्धके तु कर्कोटः किलासघ्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥
बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।
पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥
राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।
तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कटिः ॥ १६६ ॥
चोदन्युर्वारुबालक्योऽप्यल्पा सा राजकर्कटिः ।
तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥
इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।
अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥
कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेल्लाणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कटिः ।
कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्घनवासकः ॥ १६९ ॥
कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।
महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥
सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।
त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥
चिर्भिटे पुनरुर्वारुर्मृगाद्यां गजचिर्भिटा ।
विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥
अथो गवाद्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।
वृषा वारबुषा रम्भा काष्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥
कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।
कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥
सुगन्ध्यल्पफला मोचा साष्ठी काष्ठी कदल्यसौ ।
बिभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥
बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।
दैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥
संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।
धात्री कर्षफला तिष्या सेव्याऽव्यण्डा भटा दृढा ॥ १७७ ॥
हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।
अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥
गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गेष्टा रक्तिका वरा ।
चूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥
काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्त्यदनी नखी ।
जङ्गा तिक्ता च दक्षा च सा शुङ्गा चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।
हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥
मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।
मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥
मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।
शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥
देवमाल्यां वरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।
सुरूपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोद्भवा ॥ १८४ ॥
आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।
बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥
सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।
शेफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥
सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।
निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥
अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।
महासहायामम्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥
शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।
किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥
सैरेयके तु भिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।
दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्टश्च सनीलकः ॥ १९० ॥
पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।
कुन्दे माध्यः शुक्लपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥
प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।
चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥
भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।
बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥
वसुभट्टः पाशुपत एकाष्ठीलोऽम्बुको वसुः ।
नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥
जपायामोड्रपुष्पं स्यादत्र पद्मादयोऽपि च ।
विदार्यो भूमिकुष्माण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥
क्रोष्ट्रिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।
श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।
गोलोम्यां जटिलोग्रोग्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १९७ ॥
मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षड्ग्रन्था जललम्बिका ।
श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काश्मीरी देवदुन्दुभिः ॥ १९८ ॥
कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।
महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १९९ ॥
मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।
शकुलाक्षः श्वेतमध्यो हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥
जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।
कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥
बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीबेरं दीर्घरोमकम् ।
चामरं चमकं ज्येष्ठं बर्हिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥
शैलमूलं तु कच्चोरं पलाशो हिमजा जटी ।
अर्शोघ्न्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥
खञ्जेऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसोनो गृञ्जनः कटुः ।
कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥
जीर्णकञ्च पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।
हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥
स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।
लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥
फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।
गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥
कन्दं त्वस्त्री चित्रदण्ड उल्लुः कण्डूरसूरणौ ।
अर्शोघ्नो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥
शकटश्चाथ कालार्चिः नूतनं वेष्टितं दलम् ।
शोथशात्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥
वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ट्रयां मालुवा स्त्रियाम् ।
मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥
गौर्यां हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।
रोचनी रञ्जनी पीता पिञ्जा पिण्डा मनश्शिला ॥ २११ ॥
तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।
दार्व्यां दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥
पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।
कटङ्कटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कट्फलम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।
वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥
त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।
चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥
निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।
तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥
क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।
कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥
पक्कं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।
दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगे तु योजनः ॥ २१८ ॥
भूपूगे लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।
पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्यान्नताङ्कुरः ॥ २१९ ॥
हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।
दाक्षिणात्योऽप्फलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥
सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।
रक्ते स्वर्णोऽग्निकश्चाथ परिक्रोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥
खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।
परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥
हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।
स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥
ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।
पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥
सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयवादयः ।
इक्षुर्वृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥
खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।
इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥
दर्भोऽश्ववालः काशिर्नी काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।
कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥
लताकुशे तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।
शरो मुञ्जो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥
मुञ्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्ब्रह्ममेखलः ।
उल्लुकस्तूलपो दर्भे ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

वालकेश्यां दृढदला जूर्णा क्रकणपत्रिका।
पुंभूम्नि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः॥ २३०॥
स्याद्वीरणं वीरतृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्।
सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम्॥ २३१॥
नियुतस्तम्बजद्दढदैत्यगौरकुदानवम् ।
अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका॥ २३२॥
वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता।
गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका तृणम्॥ २३३॥
सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तृणं पुरम्।
छत्त्रातिच्छत्त्रापालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे॥ २३४॥
पुञ्जीलस्तु तृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे।
शष्पं बालतृणं शादः सर्वं तु तृणमर्जुनम्॥ २३५॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे वनाध्यायः॥ ३॥

---

१. 'वात्यां त्विट्कटः इति पाठान्तरम्॥

पशुसङ्ग्रहाध्यायः॥ ४॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः।
व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः॥ १॥
कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिर्हरितो हरिः।
हलीदणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगहिंसकः॥ २॥
व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारुश्चन्द्रकी मृगात्।
हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ॥ ३॥
तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिलित्सकमृगादनौ।
पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः॥ ४॥
वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः।
पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः॥ ५॥
भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः।
पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः॥ ६॥
भल्लूको दीर्घरोमर्क्षौ भल्लाटो वृकधूर्तकः।
विकरालोऽच्छभल्लश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ॥ ७॥
वार्ध्रीणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः।
महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्गदस्वरः॥ ८॥
लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः।
जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः॥ ९॥
स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशलालिकः।
हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः॥ १०॥
गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः।
मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः॥ ११॥
नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः।
यज्ञाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः॥ १२॥
राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः।
शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान्॥ १३॥
रुरुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान्।
रोहिद्दश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः॥ १४॥

न्यङ्कुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोन्नतः।
परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥
रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान्।
वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥
प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूच्चमसृणैर्घनैः।
नीलः स श्वेतरेखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥
कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोच्चकर्बुरैः।
नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥
श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला।
चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥
कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका।
सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥
गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोच्चमृदुरोमिका।
चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥
मरुजा तूच्चमसृणमृदुपाण्डुररोमिका।
रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥
चनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता।
कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥
सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोच्चघनरोमकः।
चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥
कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी।
एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥
शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका।
बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥
कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः।
कृतारुस्तु स निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥
रुचुस्तु शुक्लो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः।
कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥
सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण्।
कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥
चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः।
मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥
सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च ग्राम्यैश्चैव गवादिभिः।
शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्रोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः।
शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥
गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाहवारणः।
कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥
पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः।
कोट्टङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥
शालिजातस्तु खट्टासः पूतिः खट्टासिकापि च।
शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥
अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्हं शितिचन्दनम्।
मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥
श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्न्यना शलली शलम्।
सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥
शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः।
मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥
किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्डिवौ।
वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥
महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः।
वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ४० ॥
नीलशीर्षोऽप्यथ दिवङ्को वानरो रोहिताननः।
शृङ्गिणी सौरभेयी गौरघ्न्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥
अनड्वाह्यनडुह्युस्रा तम्बा तम्पा निलिम्पिका।
रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥
सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा।
कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥
रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा।
शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥
वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी।
एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वञ्जुला ॥ ४५ ॥
नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका।
काल्योपसर्या प्रजने पलिक्नी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥
पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्गर्भोपघातिनी।
अवतोका स्रवद्गर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।
समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥
पीनस्तनी तु पीनोध्नी सुखदोह्या तु सुव्रता ।
दुःखदोह्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥
द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेष्टुका ।
धेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥
अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाक्रान्ता तु सन्धिनी ।
आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥
विषाणी वृषभः शृङ्गी वाहो गौरक्षधूर्तिलः ।
उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् वाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥
सौरभेयो बलीवर्दो बाडबेयश्च शाकरः ।
षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥
ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्मान् मदकोहलः ।
जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥
महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।
आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥
भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ।
स्थूरी पृष्ठ्यः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥
नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।
धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोढृषु ॥ ५७ ॥
प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकादयः ।
एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥
कर्णः कर्णविहीनः स्यात् पण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।
गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥
नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।
गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥
दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।
गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥
छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।
बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥
चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।
इलिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेषे शृङ्गिणसम्फालवृष्णिपेत्वहुलुहृदाः ।
एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥
मेषी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।
खररासभचक्रीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥
रूक्षस्वरो धूम्रकर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।
चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥
करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाग्रीवः क्रमेलकः ।
दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥
करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।
श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥
दीर्घनादी गृहमृगः कुक्कुरः क्रोधनः शुनिः ।
यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डलः शुनः ॥ ६९ ॥
जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।
कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥
शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।
ओतुर्बिडालो मार्जार आखुभुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥
जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।
पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥
बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।
हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥
पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।
खुरः शफः शको विष्ठा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥
रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७४½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।
द्विपादो नहुषा गोधा व्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।
उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥
एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।
सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥
वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।
एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥
अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।
विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥
अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।
आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥
भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गरम् ।
वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥
चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।
कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥
नटी भटं खषी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।
पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥
रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।
सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥
पुल्कसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।
एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥
सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।
अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥
उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।
तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुल्कसी बकम् ॥ १३ ॥
चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री झषा परम् ।
श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥
सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रकुञ्चं शनकी कचम् ।
कची भ्रेणं भ्रकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।
वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥
शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकरं ततः ।
कटकर्मा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥
अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।
कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी मटम् ॥ १८ ॥
कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।
चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥
रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।
श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥
मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी किटम् ।
घर्घरी घिर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूनवः ॥ २१ ॥
चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।
वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥
चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।
निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥
पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।
वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥
भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।
सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥
नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।
कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥
कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।
चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥
वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।
एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥
निषादाद्ब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।
वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः क्वचित् ॥ २९ ॥
कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।
श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥
वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।
रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्तं निषादान्मार्गरश्च सः ।
एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥
जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।
वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥
अम्बष्ठी बेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।
आयोगवी तु मैत्रेयं पुल्कसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥
निषादी मेदमन्ध्रं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।
एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥

मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।
वैश्या छण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥
आयोगवी तु मधुकं घाण्टिकं नान्यपूर्विका ।
एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥

विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् क्वापि श्वपाकवाक् ।
वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥
श्वपचं सैव चण्डालाच्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।
मागधात्ताम्रजीवं सा तक्षाणं करणादसौ ॥ ३९ ॥
आयोगवाच्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।
माहिष्याच्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥
उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।
अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥
वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।
निषादी धिग्वनाच्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥
कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।
वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुक्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥
आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिञ्जकम् ।
निष्ट्याच्छूद्रा मधुश्रेणिं शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥
उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।
सोपाकं पुल्कसी निष्ट्याच्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥
अन्ध्री तु शबरान्निष्ट्यं भिल्लं सा निष्ट्यपूर्विका ।
किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ट्यपूर्विका ॥ ४६ ॥
पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ट्यपूर्विका ।
पुलिन्दश्वपचौ निष्ट्यात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥
रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाङ्कुकम् ।
पुल्कसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुल्कसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।
डोम्बी खषं सैव निष्ट्याद् बिभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४९ ॥
तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बर्बरं यवनादसौ ।
पुल्कसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वराणकम् ॥ ५० ॥
श्वपाकं क्षत्तुरुग्रस्त्री केचिदाहुर्विपर्ययम् ।
चूचु किराती शबराद्वैदेहात् पुल्कसात् क्वचित् ॥ ५१ ॥

निष्ट्यात्तु वरुटी मद्गुं वल्लारं तु किरातिका ।
निषादपुल्कसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥
विप्रा व्रात्याद् भृज्जकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।
अध्यूढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥

सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।
लिच्छिविं क्षत्रिया व्रात्याज्झल्लं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥
व्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।
प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥

सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।
वैश्या व्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥

सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।
शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥

अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।
व्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा व्रात्याच्छ्वकण्टकम् ॥ ५८ ॥

कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।
व्रात्या व्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥
अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।
पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तर्यसति गोलकः ॥ ६० ॥
अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।
ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥
क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।
देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥

मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्खकारस्तु गोलकः ।
शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥
एषां लक्षणसिद्ध्यर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।
उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिदूह्यते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः।
मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥
चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः।
अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥
कद्याजीवात्स दौष्यन्तो निषादो ध्वजघोषणात्।
कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥
नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु।
चित्रमर्द्दलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥
शूलिको दण्डयेद्दण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा।
निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥
स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया।
जीवन् सवर्णो नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥
महानर्मा च मद्गुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः।
अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥
उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्यन्तो मत्स्यघातनात्।
निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुञ्जरग्रहात् ॥ ७२ ॥
पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन्।
धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥
करणो लेखको राज्ञां बारकः शकनामकः।
चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥
रथकारो निधिप्रश्नद्यूतापणनिरूपणात्।
रथकारो व्यालमृगहिंसावृत्तिरिति क्वचित् ॥ ७५ ॥
उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात्।
अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥
इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत्।
सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्करणादिकृत् ॥ ७७ ॥
सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः।
वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात ॥ ७८ ॥
मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात्।
मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥
वाप्याद्यवतरेच्छुद्ध्यै क्षालयेन्मलिनाम्बरम्।
वणिक्पथे मागधस्य वाग्मी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा।
वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥
धीवरो मार्गसन्त्राणाद्द रामको दौत्यजीवनात्।
आयोगवः पुल्कसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥
चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान्।
चण्डालो झल्लरीकक्षो वद्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥
स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत्।
स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥
क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुल्कसो मद्यविक्रयात्।
पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥
आयोगवस्तैजसकृद्ध्रमकृन्मणिवेधकृत ।
स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥
अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा।
स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥
पुल्कसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात्।
लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥
एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः।
गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुल्कसाश्च ते ॥ ८९ ॥
रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान्।
आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥
शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुल्कसाः।
कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥
आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम्।
मेदानां चक्रवृत्तित्वं विण्मूत्रग्रहणोज्झनम् ॥ ९२ ॥
आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम्।
मेदान्ध्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुहिंसनम् ॥ ९३ ॥
मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये।
पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥
कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम्।
कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥
मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते।
योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेर्वैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।
धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ ९७ ॥
वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।
वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ ९८ ॥
वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।
आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ ९९ ॥
नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वब्धिनौगमः ।
शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृज्जकण्ठकः ॥ १०० ॥
मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।
आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ १०१ ॥
व्रात्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।
खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकृतः ॥ १०२ ॥
नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।
भारुषस्त्वर्चयेन्मातॄः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ १०३ ॥
सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।
भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ १०४ ॥
सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।
सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ १०५ ॥
श्वकण्टकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।
वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ १०६ ॥
श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।
वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ १०७ ॥
गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।
ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ १०८ ॥
शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।
त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ १०९ ॥
एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।
चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्चतुरः सुतान् ॥ ११० ॥
ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।
ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्षष्टिर्हि जातयः ॥ १११ ॥
ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।
आसाविकस्तु सैरिन्ध्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ११२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्व्यः सैरिन्ध्रजातयः ।
प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ११३ ॥
शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।
राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वास्थाः प्रेताम्बरावृताः ॥ ११४ ॥
विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्ध्राः स्युर्यथोचितम् ।
दस्युम्लेक्षगणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ११५ ॥
म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।
कार्या क्षत्त्रप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ११६ ॥
मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।
तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ११७ ॥
भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।
अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ११८ ॥
प्रतिलोमा विपर्यस्ता व्रात्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।
आनुलोमप्रातिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ११९ ॥
वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।
षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ १२० ॥
रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।
कैवर्तमेदभिल्लाश्च सप्तैता अन्त्यजातयः ॥ १२१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।
अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥
संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।
गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥
आधानिकं पुंसवनं पौंस्नमप्यथ गार्भिणम् ।
सीमन्तोन्नयनं नामकर्मामन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥
चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।
मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥
सशिखं वपनं तोडं निश्शिखं भिक्षुलोचकम् ।
ओट्टितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोट्टितं पुनः ॥ ५ ॥
आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।
शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥
उपनायस्तूपनय आनायश्च वटूकृतिः ।
ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥
गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।
प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥
वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।
वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥
उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।
जातिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥
अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।
अघायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥
अवगीताश्च हन्ता तु गुरूणां नरकीलकः ।
शिश्विदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥
त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।
शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्ग्यादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥
वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।
अग्नीन्धनं त्वग्निकार्यमाग्नीध्री चाग्निकारिका ॥ १४ ॥
ग्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।
ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्टयष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।
पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।
मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥
सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।
पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥
बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।
आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उलूखलः ॥ १९ ॥
द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।
पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥
प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥
गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।
(देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)
मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥
पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।
पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥
एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरू सब्रह्मचार्यपि ।
धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥
छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।
समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥
पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।
ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥
आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।
छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥
शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।
ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥
मीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।
आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्वं गीतिशासनम् ॥ २९ ॥
अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।
चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥
आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदभञ्जना ।
नामशास्त्रे निघण्टुर्ना सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छ्वासः सर्ग इत्यपि ।
प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥
ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।
विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥
छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।
स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥
मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।
विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥
कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावसानकाः ।
स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥
विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिष्वनुनासिकः ।
नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥
वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।
परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥
पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्चनम् ।
नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥
उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।
गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥
तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत् ।
पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघसाशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥
यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।
परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥
परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।
भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥
स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तया ।
स्यादग्रेदिधिषुश्चासौ स्यादग्रेदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥
या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।
पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥
देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥
विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।
दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।
कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥
हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।
जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥
धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।
अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्पुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥
शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मङ्गूपिका ।
श्येता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥
वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।
साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥
वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।
सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥
विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।
उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥
उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।
कन्यादाने तु यद्दत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥
गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।
दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥
स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुलुर्मङ्गलध्वनिः ।
धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥
क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।
नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥
सैव वन्दनमालाऽपि कुहालिः पूगपुष्पिका ।
हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्बन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥
तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।
उत्सवेषु सुहृद्भिर्यद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥
वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।
उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥
क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।
मधुपर्कस्तु निष्टङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥
यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।
षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
सम्प्रेषणी द्वादशेऽह्नि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥

एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥
आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
त्रिष्वातिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशेषितम् ॥ ६७ ॥

आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
सूर्योढस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
अथाग्न्याधानमाधेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।
होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
वीरोज्झप्रमुखास्तत्र वीरोज्झो न जुहोति यः ॥ ७० ॥

अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
अग्निहोत्रच्छलाद् याच्ञापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
जातमात्रगृहीताग्निर्यः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥
यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः कालिपकश्च सः ।
अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नग्नः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥
पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।
पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
सुत्वा त्वभिषवादूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥

सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
यतस्रुचो देवयवो वाघतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥

अध्वर्यूद्गातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।
मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यषीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तच्छितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥

अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्यकः ।
पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥

पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥

ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
सर्वेऽमी यज्ञक्रतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।
ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥

प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वाद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।
पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
स्रुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्रुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
स्यादिध्मप्रोक्षणं कार्ष्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।
उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
श्यैतनौधसयोर्गानं साम्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
व्यञ्जनाः पशुसंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।
इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ९६ ॥
काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।
यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ९७ ॥
अन्नादि कृतमामिक्षा दध्नोष्णं संयुतं पयः ।
पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ९८ ॥
सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।
पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ९९ ॥
हवनी स्रुक् स्रुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृद्ध्रुवा ।
अथाग्निहोत्रहवणी श्रपण्याघारणः स्रुवः ॥ १०० ॥
चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।
परिप्लवार्थदण्डा स्रुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥
चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं ग्रावाणस्त्वभ्रयोऽश्मसु ।
विघनो घनो मुद्गरे नरःफच्योद्धनन्दनाः ॥ १०२ ॥
यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।
यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥
अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।
यूपमध्यं समादानं यूपाग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥
कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।
वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १०५ ॥
यूपे सप्तदशारत्नावरत्निर्मेथिकोऽधरः ।
उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥
तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।
सुधन्वो रथगरुतः शैखालीककरञ्जकौ ॥ १०७ ॥
वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।
संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥
खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।
कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥
वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।
तस्मिन्प्रास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥
चात्वालोऽस्त्री मृत्खनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।
शस्त्राण्युक्थानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।
सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥
स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।
पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥
अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाट्यानुपूर्व्यपि ।
पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥
इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।
आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥
वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।
पतनं सत्पथाद् भ्रंशाश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥
हिंसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।
वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥
त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।
विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥
उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।
अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥
आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।
आशासनेऽर्थना याच्ञा याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥
भिक्षा च सनिरस्त्री स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।
पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥
यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।
उद्गन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥
लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।
यष्टिर्न क्ली स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥
बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।
वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥
कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।
औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालभुक् ॥ १२५ ॥
परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।
चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्युष्टिरष्टमकालभुक् ॥ १२६ ॥
चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।
षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।
भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥
शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।
भूमौ विपरिवृत्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२६ ॥
वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।
शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥
रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।
मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥
तथैव स्यात् स्थण्डिलश औलूकोऽङ्गारशाकटे ।
पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोलूखलको व्युपः ॥ १३२ ॥
पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकर्तिकः ।
जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टग्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥
पद्मासनी तु बसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।
नीवारपिष्टकानष्टावश्नाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥
एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।
और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥
तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।
चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥
प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।
शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥
कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।
शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥
प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।
तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३६ ॥
एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।
बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशनात् ॥ १४० ॥
पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।
त्रिस्सप्ताहं पयःपानं कचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥
पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।
उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥
स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।
सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।
द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥
तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।
पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥
एकान्तरितमर्धाशं षष्ठकालेषु षाष्ठिकम् ।
गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥
त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।
पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥
मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं व्राजिकं च तत् ।
पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥
कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।
कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं ब्रसी ॥ १४६ ॥
योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।
ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥
अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।
और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥
मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।
दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥
तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।
प्राचेतसस्तु बाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥
सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।
हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥
याज्ञवल्क्यस्तु योगाङ्गिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।
आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥
गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।
यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥
अष्टावक्रस्तु गर्भाजिद्दृढच्युरिध्मवाहकः ।
मत्स्यगुश्च्यवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥
अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।
कात्यायनो वररुचिर्मेधजिच्च पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥
वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।
द्राविलः पक्षिलः स्वामी मल्लनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५६ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।
अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥
परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।
शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥
असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।
अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥
महांस्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।
मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥
ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संविन्तिरनुभूश्चितिः ।
अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥
षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।
ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥
शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरी ।
धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥
यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरीषोऽध्यवसायवत् ।
वैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥
धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।
दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥
स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।
शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घङ्घोरवेङ्करौ ॥ १६९ ॥
आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।
अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥
सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।
अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥
रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूर्क्षणम् ।
उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥
स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।
मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥
आकूतिर्मतमाकूतं भावोऽभिप्राय आशयः ।
चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥
मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यग्दृष्टिर्विकुण्ठना ।
तर्कमूलिकसम्मर्शं ऊहो न क्ल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भावना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।
प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥
विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।
विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥
तन्द्रा कौसीद्यमालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।
स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥

हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।
तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥
अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।
गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥

रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।
शोषुर्ना शुंषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥
बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।
राज्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥

शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।
क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुत्क्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥
मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषदृग्गुणे ।
वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥
तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।
विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥

स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजर्य्यं हार्दसौहृदे ।
आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥
सख्यं साप्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।
कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥

सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।
आनन्दो नन्दथुर्ह्लादस्तृप्तिमुन्नन्दिहृष्टयः ॥ १८८ ॥
शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।
विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥

उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।
डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥
सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।
अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च शिलकुर्ने ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूग्रिका रौद्री करुणा तु दया कृपा।
घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौक्कुटे ॥ १९२ ॥
क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा।
ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १९३ ॥
मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा लज्जा व्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः।
हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १९४ ॥
व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम्।
दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १९५ ॥
रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना।
जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १९६ ॥
प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ।
निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १९७ ॥
संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च।
अदृष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १९८ ॥
प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः।
नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १९९ ॥
नन्दीमुखी श्वासहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका।
मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्त्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥
कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः।
कटमोर्षो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥
पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम्।
सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥
हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूम्नि चासवः।
प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥
श्वासस्तु श्वसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः।
आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥
स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धथं गुदानिले।
तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥
महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे।
मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥
स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि।
प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता।
योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥
अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्ग्रहः।
यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥
आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः।
उत्तानौ चरणावूर्वोर्न्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥
दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्मकासनी।
अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥
निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेच्चरणावुभौ।
पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥
ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम्।
नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥
नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ।
सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥
अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात्।
कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥
अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम्।
वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥
एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम्।
वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्घैका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥
अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत्।
द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोर्भ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥
जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ।
ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥
गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि।
पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥
वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत्।
वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठग्रहात् किणः ॥ २२१ ॥
कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शे जानुनिकुञ्चनम्।
भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥
पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः।
बिन्दुभेदोऽप्यधो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥
स्वस्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ।
आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्प्रतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्गोनिषदनादिकम् ।
उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतट्टिट्टिभासनम् ॥ २२५ ॥
दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।
दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥
स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।
दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥
दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।
त्रिविक्रमासनं तार्क्ष्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥
प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।
छोटिकाभिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥
षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।
मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥
प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।
धारणा तु कचिद्ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥
ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।
समाधिर्नो तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥
प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।
ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥
विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मेधावी पण्डितो बुधः ।
सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥
दीर्घदर्शी दूरदर्शी लब्धवर्णो मनीष्यपि ।
त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥
सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।
सान्दृष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥
प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।
ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥
अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।
मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥
ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।
दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥
शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।
वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।
राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥
नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।
सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥
गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।
इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिविपदोऽपराः ॥ ४ ॥
तत्र याः शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥
षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।
सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥
अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।
द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥
उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।
दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥
तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।
खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥
द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।
षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥
मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।
दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥
मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्त्रयः ।
मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥
इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।
उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥
तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।
हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नृपासनम् ॥ १५ ॥
छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।
अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥
सेवकश्चानुजीवी च यस्तु केलिसहायकः ।
वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥
सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।
मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥
अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।
क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥
कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।
हट्टे धीकर्मिकः पुर्यां चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥
रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेम्नि भौरिकः ।
महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥
अन्तःपुरेऽन्तर्वंशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदल्लस्तु सौविदः ॥ २२ ॥
स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।
प्रदेष्टा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥
दौवारिको वेत्रधरो द्वास्स्थः क्षत्ता च दर्शकः ।
द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥
मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।
सांवत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥
यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।
चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥
इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।
कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥
सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।
तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥
अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।
वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥
वैतालिको बोधकरो बन्दी तु स्तुतिपाठकः ।
मागधो मधुको घण्टाताडे घाण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।
देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृक्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥
वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।
फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥
अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।
गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपचारिका ॥ ३३ ॥
आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।
अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥
या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।
बन्धकी तु गता वेशमर्थायानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥
शय्यास्रग्भूषणादौ तु नियुक्ता परिचारिका ।
सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥
विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।
आशीःस्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥
प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।
आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्किका ॥ ३८ ॥
असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।
विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥
उदासीनः परस्तस्मात् पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥
द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिंसनो रिपुः ।
सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥
प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।
दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥
मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।
निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्रुचिः सखा ॥ ४३ ॥
कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।
आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिर्व्ययः ॥ ४४ ॥
पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।
उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥
प्रदेशनं प्राभृतं च लम्बा तूत्कोच आमिषः ।
दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खस्तृमं विप्रियागसी ।
अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥
शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।
राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥
उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।
दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥
वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिर्भवि ।
पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥
तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।
श्वदंष्ट्रार्गलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥

शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।
अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥
स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।
अहिपृष्ठं तु निर्मांसपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥
उपस्करप्रस्खलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।
छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥
सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।
पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥
सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।
शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥
त्रिहयं पञ्चपादातं यदेकरथकुञ्जरम् ।
सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैगुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥
प्रत्यासारश्चमूपार्ष्णिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।
हस्त्यश्वरथपादातं बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥

इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।
स्तम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥
दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।
महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥
मदवृन्दः कुषी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।
भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।
पृथुत्वं श्लथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥
तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।
भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥
मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।
ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥

पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।
त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥
कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मक्कणः ।
आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥

लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।
उद्भ्रान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥
औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।
स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥

करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।
गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥
स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।
उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥
आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।
किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥
मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।
कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥
तस्यास्तु पर उद्घात आरक्षः कुम्भयोरधः ।
उरःपार्श्वौ तु विक्षोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥
करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।
मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥

कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।
विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥
गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।
पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥
अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोधः स्थिताः क्रमात् ।
कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पार्ष्णिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।
सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावघेः ॥ ७९ ॥
अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।
अथ पुच्छे स्थिता किल्ली संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥
बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।
दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥
मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।
प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥
अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्खला त्रयी ।
कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥
चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।
अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥
सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुट्टकः ।
कीलस्तु पुष्यलः शङ्कुर्हिञ्जीरो लोहशृङ्खलः ॥ ८५ ॥
पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पड्बीशो घुटिकोऽपि च ।
कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥
स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।
गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥
आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥
पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।
वीतं तदुभयं यश्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥
अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।
शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥
कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।
पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥
श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।
मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥
पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।
पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥
आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।
पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्लीकवनायुजमुखा हयाः ।
ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥
निहीनास्त्वब्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।
तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥
मुसल्यन्यप्रभैकाङ्घ्रिः कराली तु जरूर्दद‌ः ।
ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥
इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।
कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्पुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥
अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।
सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोङ्गाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥
आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।
शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥
कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।
उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्घाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥
पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।
हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥
कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
खेल्लाहः कपिलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥
पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।
पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥
सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।
कोकुराहः खुरुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥
कर्काद्याः खुरुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।
सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥
अश्वपोतः किशोरः स्याद्वाम्यश्वा वडबाऽर्वती ।
लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥
अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।
स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥
अश्वा सूतेऽश्वतर्यां तु मूकाज्जातः किंसिट्टकः ।
निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।
कश्यमश्वस्य मध्यं स्यादन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्याद्दन्तच्छिद्रमुल्लूखली।
कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम्॥ १११॥
लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्याद्दन्तालयवरक्षणी।
दामाञ्चनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका॥ ११२॥
कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी।
प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विग्रहे द्वयोः॥ ११३॥

पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा।
कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम्॥ ११४॥
पादपुस्त्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम्।
युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बाक्काणप्रोहकौ॥ ११५॥

आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः।
लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका॥ ११६॥
तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः।
केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु घासिकः॥ ११७॥

अश्वानां तु गतिर्धारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा।
आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम्॥ ११८॥
इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम्।
गत्यर्थास्तद्वदर्थाश्च सर्वे ते बाच्यालङ्ककाः॥ ११९॥
तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः।
उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम्॥ १२०॥

अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत्।
तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम्॥ १२१॥
रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता।
वल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः॥ १२२॥
प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते।
यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं वाह्यधोरणे॥ १२३॥

योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः।
वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे॥ १२४॥
दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम्।
प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते॥ १२५॥
देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः।
क्रीडार्थः स्यात् पुष्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा॥ १२६॥

कर्णीरथं प्रवहणं ह्यनं रथगर्भके।
गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाह्यके॥ १२७॥
रथस्तु जयकृज्जैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः।
रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा॥ १२८॥
वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली।
एवं काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते॥ १२९॥

योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु।
धूः स्त्री धुर्वी यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम्॥ १३०॥
कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम्।
अक्षकीले त्वणिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न षण्॥ १३१॥
रथनीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम्।
रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरो ना युगन्धरः॥ १३२॥

अनुकर्षो रथस्याधोधरणन्दार्वथान्सः।
युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम्॥ १३३॥
अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ।
अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम्॥ १३४॥

स्त्री नेमिर्ना प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका।
अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः॥ १३५॥
शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम्।
प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि॥ १३६॥

आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च।
परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम्॥ १३७॥

नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः।
सव्येष्ठो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपार्ष्णिसारथिने॥ १३८॥
सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः।
पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः॥ १३९॥

पातिकः पादिकः पद्गो रथिको रथिनो रथी।
सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः॥ १४०॥
पार्ष्णिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः।
परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः॥ १४१॥
दंशिते स्थुः कवचितसज्जसन्नद्धवर्मिताः।
आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत्॥ १४२॥

काण्डपृष्ठस्त्वायुधिक आयुधीयोऽस्त्रजीवनः ।
धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ॥ १४३ ॥
चर्मी शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।
काण्डीरखाड्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादिधारिणः ॥ १४४ ॥
छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।
पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्ठोऽग्रतस्सरः ॥ १४५ ॥
पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।
सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रीणोऽप्यभ्यमित्रीय इत्यपि ॥ १४६ ॥
शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।
अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥
शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।
जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥
लघुहस्तः सुहस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्खकः ।
सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥
कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।
जङ्घालोऽतिजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥
स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूर्जस्वलोर्जितौ ।
बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥
संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।
त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।
तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥
नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।
पट्टस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥
बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।
गोधा तला च न नरौ हस्तघ्नो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥
अङ्गुलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।
अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्यं सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥
सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्त्रुघ्नमायुधम् ॥ १५७ ॥
ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।
धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।
कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वंशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥
स्नुहीदलाभो निस्त्रिंशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।
चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिका ॥ १६० ॥
जम्बूगतस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।
वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥
हुप्दुतः पुलकैरण्डः सितदीर्घानित्रस्थिनैः ।
हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥
कुण्डलो दीर्घनिर्वंशे पुलकास्त्वणुराजयः ।
अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥
साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।
पट्टसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥
कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।
प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥
भिण्डिपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।
तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥
कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।
वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥
हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्र्यस्य शेखरम् ।
प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥
शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥
भुसुण्डी स्याद्दारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।
हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥
देवदण्डोऽरत्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।
द्रुघणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥
अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्द्रुणम् ।
कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्र्यं शरासनम् ॥ १७२ ॥
कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।
कामुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्धायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥
गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।
पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।
द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम ॥ १७५ ॥
केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।
करीरपृष्ठं व्यासश्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥
पलानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।
लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥
अर्तिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।
तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥
निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।
पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥
चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।
प्रक्ष्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥
अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।
त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥
अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णिः कर्णिकारलः ।
स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥
पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।
तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥
अयशलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।
द्विद्वाविंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥
स्युश्चोटलिङ्ककस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।
कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥
पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।
स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥
त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।
अन्वर्थं स्यात समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥
दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।
वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥
हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।
मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥
वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।
निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं 'पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।
ततोऽप्यर्धाङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥
मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।
कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥
दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।
मुचुटी सिंहकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥
लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।
वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलूरिका ॥ १९४ ॥
योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।
शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥
मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।
अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥
धौते निशातं निशितं क्ष्णुतं तेजितमर्थवत् ।
फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥
अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।
हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥
कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।
कटिका सूत्रसंस्यूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥
अङ्कनं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।
लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥
यत्सेनयाऽभिनिर्याणं पत्युस्तदभिषेणनम् ।
आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥
विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।
वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥
नासीरोऽस्त्र्यग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।
मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥
आयोधनं रणं सङ्ख्यं प्रथनं प्रविदारणम् ।
सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥
अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।
समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥
संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुच्च युत् समित् ।
वीराशंसनमाजेर्भूर्घोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।
अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्खलितं चलम् ॥ २०७ ॥
अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्ठवम् ।
वीराणां यद्रणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥
प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।
प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥
शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।
नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥
सन्द्रवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।
विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥
निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।
निस्तर्हणं निशरणं निकारणन्शुिम्भने ॥ २१२ ॥
निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थनंनिहिंसने ।
प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥
परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥
उज्जासनं संज्ञपनं क्राथनं प्रविसारणम् ।
व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥
रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।
शवयानं कटः खाटिश्चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥
अरुः क्षतं ना क्षणितुर्व्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।
किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥
जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।
अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्च्युतः शरः ॥ २१८ ॥
पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।
प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्छालमूर्छितौ ॥ २१९ ॥
परासुरुपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥
आयुर्जीवितकाले क्ली जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२०½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

---

१. 'निर्ग्रन्थन'—इति पाठा० ॥

वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्या भूमिस्पृशो वैश्या ऊरव्या ऊरुजा विशः ।
आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥
मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।
उञ्छो धान्यश आदानं कणिशाद्यर्जनं सिलम् ॥ २ ॥
ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।
सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥
पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्याद्दणं पर्युदञ्चनम् ।
तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥
वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्वृद्धिः पुनः कला ।
सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥
कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।
परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥
सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।
त्रिष्वालेखात् कुटुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥
कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।
वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्तर्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥
गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।
मध्यस्थः प्राश्निकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥
कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूर्लग्नकोऽन्तरः ।
अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥
सन्दंशितोऽभिशस्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।
सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥
अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।
न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।
सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था पारिषत् सभा ॥ १३ ॥
समज्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।
द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥
न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।
समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।
कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥
अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।
केदारः केदरः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥
भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।
खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥
मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्गादिसम्भवे ।
यव्यव्रैहेयशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥
यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।
माषाच्चैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥
एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।
द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकार्ढकिकादयः ॥ २१ ॥
खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।
तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥
त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।
बीजाकृतं तूप्तकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥
लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।
पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥
ऋरुका त्विष्टकाया विड्लषस्तु क्षारमृत्तिका ।
धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥
दारिपत्परिपत्पङ्कचिकिलाश्च निषद्वरः ।
शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥
क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।
हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥
निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।
योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥
गोदारणं तु कुन्दालमभ्रिः स्त्री त्सरूस्तु तन्मुखे ।
प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभञ्जनः ॥ २९ ॥
दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।
स्यात्समीकरणं मत्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥
न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।
व्रीहिर्वरेणुको बीव्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

व्रीहयः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।
सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥
सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।
श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥
षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।
कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥
माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।
वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥
मुद्गस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।
पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेलजयशारदाः ॥ ३६ ॥
सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।
कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥
वनमुद्गे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।
खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥
जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।
कृष्णेऽस्मिंस्तिलके (षण्डे) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥
तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।
मङ्गल्यं पृथुसूप्यश्च व्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥
कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।
त्रिष्टुभभ्रातरक्षोघ्नाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥
पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरेऽथो राजसर्षपे ।
क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥
वंशावर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।
कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥
पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।
खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥
स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।
सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥
खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।
अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥
काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।
कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका।
आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥
पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका।
छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥

कुमारी मुसली वंश्या गुडूची कटुकैषणा।
सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥
कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका।
यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥

आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च।
महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥
यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका।
गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥
शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः।
वालनाटकवाह्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥
विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे।
चिक्काणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥
शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी।
श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥
जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका।
नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसेवितः ॥ ५७ ॥
अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम्।
श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥

स्त्री काककङ्गुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः।
गर्मुत पुनर्गर्मुटिका घुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥
ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा।
गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥

रूक्षणीया जन्तुफला गवेधुश्च गवेधुका।
गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥ ६१ ॥
गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ।
माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥
कोद्रवाद्याः कुधान्यानि व्रीहयः शालिकादयः।
स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्र्ययफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका।
कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कणिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥
पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम्।
धान्यराशिस्तु वलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥
गृहार्थोऽसौ कपोल्लः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ।
समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥
ऋद्धमावसितं धान्य पूतं तु बहुलीकृतम्।
खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिषेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥

क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे।
क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥
विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः।
भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥
वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः।
नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥

परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च।
सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥

पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक्।
वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥
विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु।
वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥

अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्रूप्यं तद्द्वयमाहतम्।
कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥

ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम्।
स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिहलं कटम् ॥ ७५ ॥
शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम्।
पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥

श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला।
जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥
कपिवल्ल्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली।
काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥
मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम्।
(मरिचं) पलितं श्यामं वेल्लनं पेल्लवं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च त्र्यूषणं (तूषणादिकम्) ।
कावेरं त्रिकटु व्योषमव्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥
ग्रन्थिकानलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषडूषणम् ।
चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च त्रिविका ॥ ८१ ॥
त्रिफला तु मदोदर्का भूतसारी फलत्रिका ।
बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥
पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।
अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥
मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।
अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥
कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।
सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥
कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।
कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥
निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।
सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्त्रुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥
कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयताऽपि च ।
काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥
अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
जन्या जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ ८९ ॥
शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।
शिग्रजं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥
पद्मोत्तरं बर्हिशिखं महारजतमित्यपि ।
कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥
बर्हिपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुकम् ।
शतपर्वं च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥
समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।
ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥
ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योज्या युगाह्वया ।
अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥
हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।
कालानुसार्यं पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥
क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।
विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥
नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।
गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥
कुष्ठं वाप्यं पारिभाव्य रोगाख्यं पाकलोत्पले ।
व्यालायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥
सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥
धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हट्टविलासिनी ।
अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥
अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥
मधु क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च वरालकम् ॥ १०३ ॥
त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं भृङ्गमुत्कटम् ।
मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥
घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।
चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥
अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।
जातीकोशं कोशफलमथागरु नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥
लोहाख्यं क्रमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।
वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥
वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।
कालागरु तु मङ्गल्या मल्लिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥
श्रीवेष्टः पायसं श्र्याख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।
वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥
वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।
कण्याख्यः कपिलः सिह्लः कृत्रिमः चैत्रिको वरः ॥ ११० ॥
तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।
बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूपोऽङ्कुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः।
चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः॥ ११२॥

श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम्।
पीतचन्दनमर्केष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम्॥ ११३॥
किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम्।
तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने॥ ११४॥

पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम्।
कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि॥ ११५॥
कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम्।
करटं चितकाबेरं गौरवं वासनीयकम्॥ ११६॥
काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम्।
घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च॥ ११७॥

नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम्।
गवलं माहिषं शृङ्गं शशोर्णं शशलोमनि॥ ११८॥

अब्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम्।
भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे॥ ११९॥
अक्षीबं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम्।
माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु॥ १२०॥
विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम्।
सम्भरी पुनरेतद्द्रौमकं तु रुमाभवम्॥ १२१॥

वस्नं घाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम्।
क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम्॥ १२२॥
ऊषमूषरजं चेव्यं पांशुजं यवनं पटु।
शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम्॥ १२३॥
विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः।
घटिकालवणं तूग्रं विडवद्धनकालकम्॥ १२४॥
सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम्।
अक्षं तार्द्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके॥ १२५॥

सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम्।
दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः॥ १२६॥
तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्वरः।
श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा॥ १२७॥

यवाग्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः।
रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः॥ १२८॥
वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः।
स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोंगवाही सुवर्चिका॥ १२९॥

टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः।
रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः॥ १३०॥
परशुः शस्त्रकष्टङ्कः शस्त्रक्षारो महाबलः।
सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम्॥ १३१॥

पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथ्विका कारवी पृथुः।
तिन्तृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम्॥ १३२॥
सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि।
गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा॥ १३३॥

फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्र्यथो शर्करा सिता।
मधूलं तु मधुने स्त्री मधुकं तत्पुरातनम्॥ १३४॥
भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके।
अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम्॥ १३५॥

औद्दालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम्।
छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः॥ १३६॥
मदनस्तु मधूच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे।
स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम्॥ १३७॥

घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्दिकम्।
हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम्॥ १३८॥
दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु।
स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ॥ १३९॥
सञ्जावने तूप्नमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि।
मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम्॥ १४०॥
अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम्।
वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि॥ १४१॥

छिन्नं दधि बुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे।
बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रप्सं स्यादघनं दधि॥ १४२॥
पत्रलं चाथ पक्कं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात्।
धुक्षिमं तूद्धृतस्नेहान्मथितात्तु प्रमाथितम्॥ १४३॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राम्राढं दधिमण्डके ।
आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापश्च मूतकम् ॥ १४४ ॥
पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।
गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥
ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।
आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥
अविसोढाविमरीसे अविदूसमवेः पयः ।
सन्तानिनी क्षीरशरः शरोग्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥
तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।
घोलं तूम्रं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥
मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।
तक्रं कट्वरमर्शोघ्नं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥
निरम्बु घोलं मथितमुदश्वित्तु जलार्धकम् ॥ १४९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।
पज्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥
दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।
नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥
लाडीककिङ्करप्रेङ्खपाल्लकपरिकर्मिणः ।
सञ्चारिते धीकरश्च गोप्याः स्युर्दाससूनवः ॥ ३ ॥
बन्धके स्थित आयत्तो भक्तायैव स्थितः कृतः ।
स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥
भृतके भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकस्त्रिषु ।
भरण्यं भरणं भर्म वेतनं निष्क्रयो भृतिः ॥ ५ ॥
कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।
वार्त्तोहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥
शिक्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।
कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥
कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।
वाणिर्व्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥
तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।
धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥
पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।
कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥
आवर्तनं तु वलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।
सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥
सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।
सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥
लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥
पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।
पलगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥
संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
मणिकारो वैघटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो मौष्टिकः समाः।
कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः॥ १६॥
शाङ्खिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका।
सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका बुषा स्मृता॥ १७॥

विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च।
आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम्॥ १८॥
नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः।
रोषाणस्तु घृषिर्घृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि॥ १९॥

यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका।
प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना॥ २०॥
प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम्।
प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम्॥ २१॥
हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा।
कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्याट्टङ्कः पाषाणदारकः॥ २२॥
कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः।
लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिर्लेखाक्षरस्य या॥ २३॥

लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा।
वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिर्लेखा तु कृत्रिमा॥ २४॥
मेलामन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च।
मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता॥ २५॥

चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसाय्यपि।
क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कर्त्रिका कर्तनी क्रवी॥ २६॥
कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम्।
धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम्॥ २७॥
आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्ख्यगोदुहौ।
गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते॥ २८॥

जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि।
सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या॥ २९॥
रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका।
गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी॥ ३०॥
ग्रन्थिर्बन्धो व्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा व्रजः।
मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च॥ ३१॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी।
घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्र्यन्त्यजालयः॥ ३२॥
मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः।
ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी॥ ३३॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट्।
ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः॥ ३४॥
स उद्घनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तक्ष्यते।
व्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः॥ ३५॥

स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्दारुतक्षणी।
क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्त्तनः समौ॥ ३६॥
जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी।
सूनातटिर्वधस्थानं कृपाणीली च कर्तरी॥ ३७॥
मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ।
आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च॥ ३८॥
आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी।
श्वा विश्वकद्रुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः॥ ३९॥

दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः।
वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम्॥ ४०॥
शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम्।
पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः॥ ४१॥

कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ।
मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम्॥ ४२॥
जालमानाय उद्दालस्तून्नतो मुकुलाकृतिः।
पादूकृच्चर्मकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी॥ ४३॥
वद्ध्री नद्ध्री वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः।
कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम्॥ ४४॥
शीधु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्रुता।
परिस्रुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा॥ ४५॥
मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका।
कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका॥ ४६॥

पक्वैस्त्विक्षुरसैरस्त्री शीधुः पक्वरसः शिवः।
शीतपक्वो रूक्षणीयोऽप्यपक्वै रसिकासवौ॥ ४७॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥
मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।
मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥

काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।
नग्नहूर्नो मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥
जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।
आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥
कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।
उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥
शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।
सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥
पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।
प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥

विष्टिर्नो कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।
अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिम्लुचः ॥ ५५ ॥
प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।
स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥

पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।
पटच्चरः पटच्चोरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥
लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तैन्यं च चौरिका ।
धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥
चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।
द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चिकादयः ॥ ५९ ॥
समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।
पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥
शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।
अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्र्य्द्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥

कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।
जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥
रङ्गाजीवो नृतुर्नभ्रो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।
सर्वकेशी कृशाश्वी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरज्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।
केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥
नर्तको भूमिकां प्राप्तो देवानामर्धमानुषः ।
रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥
रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।
रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥
प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।
स भ्रूकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रकुंसश्च भृकुंसवत् ॥ ६७ ॥
तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्धारी भूमिकागतः ।
पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥

नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपार्श्विकाः ।
विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥
वेश्याचार्यः पीठमर्दः षिड्गो वातसुतो विटः ।
मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥
वेणुध्माः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥
सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थे नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।
उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥
ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।
नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥

रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।
नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥
शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।
रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च क्वचित् ॥ ७५ ॥

स्थायिभावाः क्रमादेषां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।
उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥

बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्यद्भुतो रसः ।
भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥

बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्चर्यं फुल्लमद्भुतम् ।
भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥
भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।
करुणः सकृपो रौद्रस्तूग्रोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।
विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वर्त्स्यतः ॥ ८० ॥
स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।
स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥

रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।
रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥
स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।
रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥
सोत्प्रासे त्वाच्छुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।
निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥
अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।
स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥
आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।

न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥
क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।
अस्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥
न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।
जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥
एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।
आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥
असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।
उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥

स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम् ।
भ्रकुटिर्भृकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥
चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।
चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥
वल्लभानुकृतिर्लीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।
विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥

सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।
बिब्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥
विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।
मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।
विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥
सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।
अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥
करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।
व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥

भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।
त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥
नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।
ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥
व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।
भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥
चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।
भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥
अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।
महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥

देवी स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरज्जुका ।
भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥
तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।
स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥
पतिस्त्वार्य आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।
आवुकस्तु पिताऽम्बा तु माता ज्येष्ठा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥
बला बुसा कनिष्ठा स्यादावुत्तो भगिनीपतिः ।
बाला वासूर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥
आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्यपुत्रकः ।
हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥

अब्रह्मण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।
गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥
तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्वं दिव्यमैश्वरम् ।
सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥
तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।
स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

योदूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।
काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥
अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।
सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥
काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।
वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥
ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।
वंशादिकं तु सुषिरमानद्धं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥
घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।
विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥
स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।
तन्त्र्यश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥
एकादश्येकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।
वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥
विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥
कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।
वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥
परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।
तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥
निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।
लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥
विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥
ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।
झिञ्झिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥
वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।
शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥
तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।
काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥
नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।
वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढक्कारी किन्नरीति च ।
सारिका कुक्खुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥
दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्किरो जर्जरश्च सः ।
मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्याालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ १२९ ॥
पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।
व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥
मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।
घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥
स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।
धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥
ते केकिचातकाजक्रुङ् पिकभेकगजस्वराः ।
दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्द्यपि ॥ १३३ ॥
स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।
हुडुक्कस्तु हडक्कोऽस्त्री समौ पणवमर्द्दलौ ॥ १३४ ॥
वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ।
तिमिलाटट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥
वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।
तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥
तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।
संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥
पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।
देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥
क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।
नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥
प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।
वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥
निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥
नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४१½ ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
भूमिकाण्डे शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

---

४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।
रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥
अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।
कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्त्र्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥
गर्तः पतेरो भूश्वभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।
शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु बासुकिः ॥ ३ ॥
नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।
सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥
उरगो भुजगो जिह्मो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।
फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥
दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्श्रवा हरिः ।
बिलौका गूढपाच्चक्री नाकुसद्मानिलाशनः ॥ ६ ॥
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥
फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।
दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥
राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।
वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥
षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।
त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥
निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।
दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥
कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।
शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥
आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।
अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥
किंशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।
गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनासो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।
दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥
अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।
वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥
दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।
पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥
वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।
पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥
अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।
मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥
राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।
अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥
सर्पाक्षरस्तु निर्मोकः कञ्चुको निल्वयन्यपि ।
अहिनिल्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥
गरलं तु विषं क्ष्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।
क्ष्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥
कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मवालुकम् ।
ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु वालुकम् ॥ २३ ॥
एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।
सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥
मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।
विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥
गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।
अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥
गौधेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमर्शाति च ।
नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥
नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।
कृकलासः प्रतिरविः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥
स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।
हालाहलस्त्वञ्जनिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥
सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।
टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुडचमत्स्या सुरश्वेता कुण्डृणाची सुराजिका ।
उन्दुरुर्मूषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥
चुचुन्दरी तु गन्धाखुर्गिरिका बालमूषिका ।
वृश्चिके त्वाल्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥

खर्जूरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।
आढा शतपदी कर्णजलूका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥
मूषिका लूतिका लूता तन्तुवायश्च जालिकः ।
ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः क्रुमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥

ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।
लूतापट्टस्तु तत्कोश उद्दंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥
घुणः कृमिः काष्ठभवा लूतातः स्यात् पिपीलिका ।
ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥

उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।
या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥३७॥

वम्रो वम्र्युपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।
तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥
नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।
पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥

सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।
शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥
पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।
जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥

स्थिरजिह्वः सङ्घचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।
अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालोऽपदालकः ॥ ४२ ॥
वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।
फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥
एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।
शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥
नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।
क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥
उद्दण्डपालनदलद्रेकराजीवकोत्पलाः ।
कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिर्द्विधागतिः ।
भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥
मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेपिशाचकः ।
पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥
कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।
चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥
कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।
गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥
दुली द्रुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् झषः ।
खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥
तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।
ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥
नक्रे तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।
तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥
उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।
शिंशुमारस्त्वम्बुकपिरुष्णवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥
असिप्लवोऽम्बुलूकी[1] स्त्री वीरलस्तु महाझषः ।
त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥
त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।
मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्मुक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥
मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।
शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥
स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
जलूका तु जलालोका सृक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥
या जलौका तृणचरी सा स्यात् तृणजलायुका ।
गण्डूपदः किञ्चुलुको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥
स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।
ते जलेऽपि जलाख्याः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

---

१. '—म्बुलूती' इति पाठान्तरम् ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।
नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥

पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।
विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥

वार्न पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।
वल्लूरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥

काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।
शीतलं स्वादुनि जले द्राग्भूतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥

जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।
अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥

आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥

अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।
अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥

विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।
पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥

आहावश्च निपानञ्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।
प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥

आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।
उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥

रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।
उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरप्पतिः ॥ ११ ॥

सरित्पतिरकूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।
मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिर्महोदधिः ॥ १२ ॥

कूलेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णिर्वेलाम्बुवर्धनम् ।
डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥

भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिंस्त्वेव महत्यषण् ।
ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।
नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥

उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।
केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥

कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।
नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥

आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।
सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥

कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।
अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥

गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।
घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यक्ली पयोवहा ॥ २० ॥

सरणी हरणिर्भ्रूणिर्निर्गमद्वारि तु भ्रमः ।
उद्घाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥

नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।
हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥

तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।
अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥

त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गगा ।
भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥

धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।
यमस्वसा तु यमुना कालिन्द्यर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥

नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।
बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥

टापी तु तापिनी शैब्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।
शतद्रूस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥

गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।
शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥

ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।
नदः सरस्वान् भिद्योद्ध्यौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।
चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥

तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।
पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥

अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं क्ली पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।
सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूम्नि बालुकाः ॥ ३३ ॥

उत्पलं स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।
नीलोत्पलञ्च कन्दोष्टं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥

इन्दीवरञ्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।
वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥

कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।
पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥

सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।
सरोजमब्जमप्पुष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥

सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।
बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥

पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।
रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥

चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।
पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥
श्रीपुष्पं स्वर्णराजञ्च कुमुदं गर्दभाह्वयम् ।
गन्धसोमं कुमुचन्द्रं कैरवञ्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥

अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।
करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥

मृणाली शतपर्व क्ली बिसञ्च नलिनी पुनः ।
बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥

भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।
कुमुद्वती कुमुदिनी शालूकं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्मं क्ली कुसुमच्छदः ।
किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥

कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्कलोड्यकः ॥ ४६ ॥

शुक्तकारं तु कसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।
शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥

क्षीरबीजः क्षीरशुक्तस्तर्पणो जलकण्टकः ।
चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥

शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।
शैवालञ्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥

पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।
पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥
ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।
स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥
स्युः कर्वटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।
कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥
पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।
कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥
शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्धे बाटकोऽस्त्री स्यात् ।
साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥
द्वारका तु द्वारवती मधुरा तु मधूषिका ।
मथुरा च मधूपघ्ना कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥
वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।
मिथिला पूर्विदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥
हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाह्वं हस्तिनापुरम् ।
अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥
अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।
देवीकोट्टः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥
ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।
ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥
प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।
सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥
प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपघ्नं त्वन्तिकाश्रयः ।
पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥
ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।
खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥
प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।
आवेष्टकस्तु बाटोऽस्त्री विवृतश्च वृतिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।
गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥
रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।
राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥
स एव पुरि दिङ्मार्गो बाहनी चोपविष्करम् ।
अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥
शय्यं निवसनं सद्म बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।
निकार्यवासावसथनिकाय्यनिलयालयाः ॥ १८ ॥
न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।
महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥
आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥
कुण्यशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।
चतुरं हस्तिनां शाला बाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥
सन्दानिनी तु गोशाला हविश्शाला विषाणिका ।
आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥
कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।
संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥
वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।
तैलिशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥
इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।
बपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥
क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।
चतुश्शालं सञ्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥
मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेण्टं विटाश्रये ।
कुटीरस्तु कुटी पल्ली चैत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥
सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्टपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
देवतायतनं चैत्यं विहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥
सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।
तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥
राजवेश्मोपकार्या स्यादुपकार्योपकारिका ।
स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिका राजधाम्नां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
कूटागारं तु वलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥

कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्घातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥

वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिग्गृहम् ।
आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
आवालिर्हट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥

कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येडूकं त्वन्तरस्थिकम् ।
नीव्रं वलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।
वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।
सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किका ।
तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥

गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।
सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥
नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥

बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
अथ त्र्ययौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।
विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥

सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।
मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कुटः ॥ ४८ ॥
साधारणी कुञ्चिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।
एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥

अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।
अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥
गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।
आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥

कोणाश्रौ नर्यणिर्न क्ली स्त्रियोऽश्रस्त्रक्तिकोटयः ।
सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥
दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वस्त्रधारणी ।
कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥
वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।
उद्धानमश्मन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥
हसन्त्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।
पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥
कंटाहः कर्परो लट्वो मणिकः स्यादलिञ्जरम् ।
भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥
ऋचीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।
वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥

भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।
निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥

घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।
शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥

खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।
स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥
अवगाहो जलद्रोणिरुष्ट्रिका काञ्चिकादिभृत् ।
भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥
भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।
चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।
वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥
स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्गः सम्पुटः पुटः ।
धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।
अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ ६५ ॥
प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।
फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥
शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।
शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥

गोधूमचूर्णे शमिता चिक्कसो यवचूर्णके ।
पृथुकश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥
खदिका तु गुडाद्याढ्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।
सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥

पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु मर्मरा ।
उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥
ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।
धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥
पूपस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।
उत्कारिका चूर्णपूपे कुल्माषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥

शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्का खण्डे घृतोत्तरे ।
संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥
क्षीराढ्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।
फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्कालपशर्करा ॥ ७४ ॥

शष्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।
जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥
पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।
पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥
दग्धान्नं भिस्सिटा भिक्षी परमान्नं तु पायसम् ।
क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाग्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥

यवागुल्या स्याद्घनाम्लायां यवागुली मण्डिका समे ।
मासराचामनिस्स्रावप्रस्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।
तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७९ ॥
यवागूरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।
विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥

खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्का घनद्रवा ।
सौवीरं काञ्जिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥

अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।
गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥

तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।
मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥
मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।
यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिकम् ॥ ८४ ॥
त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।
निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥

सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।
स्त्री पक्कभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥
वेशवारः पिष्टमांसे पक्के भूतिस्ततोऽन्यथा ।
रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥

सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।
सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्कं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥
उत्तप्तं शुष्कमांसं स्याद्वल्लूरा त्र्यथ स्त्रियाम् ।
पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥
शाकोऽस्त्री हरितं शिग्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।
कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥
लेह्यं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।
पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥

त्रिष्वाद्भुताद्भक्ष्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।
सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्लवाः ॥ ९२ ॥
गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।
पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्कं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥
प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।
शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्दध्यादिसंस्कृते ।
शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ९५ ॥
तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।
यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ९६ ॥
दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।
अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ९७ ॥
सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।
सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ९८ ॥
बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।
त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्स्नेहं वसान्वितम् ॥ ९९ ॥
मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।
परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥
कबलः कवलो ग्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।
गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥
जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।
प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥
स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥
धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।
काभं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १०४ ॥
पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।
तृप्तिः सुधा च सौहित्यं तृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥
करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोज्झिते ।
खण्डपर्कटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १०६ ॥
अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।
करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥
स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्तरी ।
भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १०८ ॥
अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।
चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥
नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।
निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृत् ॥ ११० ॥

वीरस्त्राका या तु शरशालाकायन्त्रनिर्मिता ।
पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्जिका ॥ १११ ॥
परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।
प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥
उद्वर्तनं तूत्सादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।
उपस्पर्शोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥
सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।
यत्तु सर्वौषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥
यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।
ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥
सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।
आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥
चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलक्रिमिरोमजम् ।
वाल्कं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥
कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्कवं मृगरोमजे ।
पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥
अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।
राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥
अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।
निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥
आप्रपदीनं प्रपदव्यापि वाल्कादयस्त्रिषु ।
अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके ॥ १२१ ॥
चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादर्धोरुकमम्बरम् ।
संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूक्ष्मं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥
वैकक्ष्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोत्तरासङ्गः ।
चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥
मशकहरी तु चतुष्की शिरसि स्त्रिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।
काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारा यवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥
दूष्यं स्थुलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।
नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥
पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनाममी ।
निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वंरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।
निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटच्चरम् ॥ १२७ ॥
निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।
चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥
कक्ष्यापटस्तु कौपीनं समौ रल्लककम्बलौ ।
विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥
शाणी गोणी छिद्रवस्त्रैश्चीरं खण्डलमस्त्रियाम् ।
नक्तकः कर्पटो वस्त्रग्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्चयः ॥ १३० ॥
कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कक्ष्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।
वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥
पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।
आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥
अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।
विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥
उत्क्षिप्तिका तु कर्णीकस्तालपत्रं तु तालकम् ।
कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्को दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥
वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥
चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।
वालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥
ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।
स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥
हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।
देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥
तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥
द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।
अर्धहारश्चतुष्षष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥
अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
एकावल्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥
यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।
गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।
केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥
आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।
पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १४४ ॥
साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।
शिञ्जिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥
कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।
स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥
स्त्री चर्क्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।
मार्ष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥
स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।
चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥
पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।
पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥
राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।
त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥
चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।
सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिल्हकम् ॥ १५१ ॥
लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।
पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥
कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्दमः ।
यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥
कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।
मालाङ्क्लिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥
केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।
प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥
वैकक्ष्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुज्झिते ।
संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥
अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।
चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥
रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।
अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।
आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५९ ॥
पन्तद्ग्रहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।
आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥
दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।
वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥
दर्पणो मुकुरादर्शौ कन्दुको गण्डकः समौ ।
पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥
उपला तु दृषत्पुत्रः शिला माता दृषत्समाः ।
दर्विस्तु कम्बिस्तर्डूः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥
विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।
आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥
शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।
प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥
कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।
नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥
उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।
संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥
शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।
पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥
कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।
परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥
आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्कपाल्यपि ।
ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥
मेहनं मिथुनत्वं च समे निंसनचुम्बने ॥ १७०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
पातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।
पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥
स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या जरायुजाः ।
अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥
पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।
तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥
स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।
वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥
प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।
अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥
सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।
कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥
अचिरव्यूढा तु वधूः पतिंवरा तु स्वयंवरा वर्या ।
कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥
स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।
प्राप्तर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥
वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।
स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलटेत्वरी ॥ ९ ॥
बन्धकी पांसुला चर्चा चला नग्ना तु कोट्टवी ।
भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥
विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।
कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥
वरारोहोत्तमा नारी सैव स्यान्मत्तकाशिनी ।
कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥
अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।
वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥
पतिवत्नी जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।
कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि।
रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि॥ १५॥
ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः।
निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्त्र्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी॥ १६॥
अद्यश्वीना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी।
विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका॥ १७॥
जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः।
गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम्॥ १८॥
बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च।
सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः॥ १९॥
बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिश्वी शिशुवर्जिता।
अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका॥ २०॥
कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च।
वृद्धा पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती॥ २१॥
उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रर्यार्यी क्षत्रियीति च।
आचार्यानी च पुंयोगादर्यार्याण्यौ तु जातितः॥ २२॥
क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः।
स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता॥ २३॥
पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना।
वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे॥ २४॥
कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत्।
सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी॥ २५॥
दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका।
जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा॥ २६॥
सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका।
ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च॥ २७॥
पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च।
कनिष्ठा स्यालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका॥ २८॥
बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता।
पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः॥ २९॥
मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः।
दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता॥ ३०॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः।
पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृव्याः सहजाः पितुः॥ ३१॥
ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः।
स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः॥ ३२॥
देवरो देवृदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः।
दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः॥ ३३॥
समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः।
भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी॥ ३४॥
सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः।
पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूम्नि दारवत्॥ ३५॥
जाया प्रजावती भ्रातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया वधूः।
स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली॥ ३६॥
भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम्।
रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः॥ ३७॥
पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः।
जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः॥ ३८॥
वेश्यापतौ षिद्गकुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः।
पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः॥ ३९॥
सुतः पोतश्च पुङ्गर्भे नरो दुहितरि स्त्रियः।
द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा॥ ४०॥
तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा।
जामेयभागिनेयौ तु स्वस्रीयोऽथ पितृष्वसुः॥ ४१॥
पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्रीय इत्यपि।
एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः॥ ४२॥
सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ।
दास्या दासेयदासेरौ पौंश्चलेयोऽसतीसुते॥ ४३॥
बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलटेयश्च कौलटेरश्च।
साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलटेयश्च॥ ४४॥
पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः।
नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः॥ ४५॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।
अयं पल्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥

सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।
मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।
जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥

पितरस्तु पितुर्वंश्या मातुर्मातामहाः कुले ।
अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥

राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।
स्युर्ज्ञातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥

स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।
परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥

देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।
चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥

बन्धः प्रजानुकः कायो भूघनः सञ्चरोऽपि च ।
प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥

ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्रंसजा जरा ।
शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥

गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।
अंशास्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेंऽशके ।
अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।
गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥

पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेपणमस्त्रियाम् ।
प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥

नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्ठीवदस्त्रियौ ।
सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरूरुमूलानि वङ्क्षणाः ॥ ५९ ॥

अङ्कस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।
पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं वुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मेढ्रः शेफकोशौ शिश्नं मेहनशेफसी ।
पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥

उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।
सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥

धारका गुह्यधारायां पुम्फिका गुह्यजे मले ।
अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥

काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।
पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥

ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।
कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥

वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।
मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥

कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।
अवलग्नवलग्नौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥

हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।
स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥

न क्ली कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥

उलूखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्क्षणस्य च ।
कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥

स्कन्धो दोश्शिखरोंऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।
दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥

प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।
प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥

मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।
पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥

अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।
ज्येष्ठा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥

करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।
तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्नवः।
खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः॥ ७६॥

चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः।
षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे॥ ७७॥

तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि।
प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलुकश्चुलः॥ ७८॥

पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ।
अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम्॥ ७९॥

घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः।
प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम्॥ ८०॥

तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह।
अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः॥ ८१॥

दघ्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते।
व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक्॥ ८२॥

त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्बाहुपुम्माने।
गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा॥ ८३॥

शिरोधरावशुषिरा शिरोधिर्व्योपलण्डिका।
कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका॥ ८४॥

घाटाऽप्यवटुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः।
उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्धा च मस्तिकः॥ ८५॥

मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम्।
तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम्॥ ८६॥

ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत्।
अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च॥ ८७॥

दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सृक्कणी दशनाः पुनः।
रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः॥ ८८॥

मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः।
तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम्॥ ८९॥

रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता।
गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण्॥ ९०॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका।
शिङ्घाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ॥ ९१॥

नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्घाणो नासिकामलः।
पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः॥ ९२॥

पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः।
पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशष्कुली॥ ९३॥

ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम्।
दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्ष्णः कनीनिका॥ ९४॥

वल्गु पक्ष्म च दृग्लोम्नि दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी।
बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम्॥ ९५॥
ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ।
भ्रूर्भ्रिलिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका॥ ९६॥

जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः।
तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः॥ ९७॥

वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः।
कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि॥ ९८॥

ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः।
पर्पर्यो स्याद्वल्लरीका झल्लर्यो झम्पटिः क्षुवः॥ ९९॥
केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे।
चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः॥ १००॥

तद्ग्रन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा।
प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः॥ १०१॥

चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा।
बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः॥ १०२॥

श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्घाणशिङ्घिनी।
त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा॥ १०३॥

रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः।
मूलधातुर्वह्निसुतो महाधातुरसृक्करः॥ १०४॥

रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम्।
शाक्यं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम्॥ १०५॥

आग्नेयं प्राणदं विस्रं वासिष्ठं शोणितासृजी।
मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम्॥ १०६॥

रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम्।
मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम्॥ १०७॥

विस्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि।
अथास्थि कीकसं विड्डुं कललं कूरमाढिकम्॥ १०८॥

कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम्।
भारद्वाजं श्वदयितं सारसङ्घातकर्कराः॥ १०९॥

मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम्।
अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली॥ ११०॥

रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम्।
शुक्रं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा॥ १११॥
तिलकं क्लोम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः।
पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ॥ ११२॥

अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत्।
गुल्मः प्लीहा च डिम्बः स्यादष्ठीला गर्भसम्पुटः॥ ११३॥

अग्रमांसं तु हृदयं हृद्रसा त्वामिषो रसः।
कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्जरम्॥ ११४॥

पार्श्वस्य वङ्क्रिः पर्शुर्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्वना।
कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थनि॥ ११५॥

शाखास्थि नलकं जानोरष्ठी स्यात् कूर्परस्य च।
धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका॥ ११६॥

ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा।
नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम्॥ ११७॥

लसीका लसिका रक्तरसमांसविपाकजाः।
पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत्॥ ११८॥

उच्चारो विण्न ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम्।
विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा॥ ११९॥

प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत्।
सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम्॥ १२०॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः।
क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः॥ १२१॥

दवथुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवथुः पुमान्।
शोफोऽस्त्री श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका॥ १२२॥

स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी।
खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचर्चिकाः॥ १२३॥

कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः।
यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम्॥ १२४॥

श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु दद्रुः स्त्री मुखजः पुनः।
पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृषन्मुखे॥ १२५॥

मङ्कुस्तु सिद्ध्म सिध्मं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम्।
उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छर्दिका वमिः॥ १२६॥

झिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेका च हिक्किका।
उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम्॥ १२७॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः।
आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः॥ १२८॥

नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका।
गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः॥ १२९॥

गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः।
शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः॥ १३०॥

स्यादुष्ट्रग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्रावी कफोद्भवः।
अर्शो दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने॥ १३१॥

उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः।
नेत्ररुक् कामला क्लीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा॥ १३२॥

श्लीपदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान्।
अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः॥ १३३॥

सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः।
गजे ज्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः॥ १३४॥

उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः।
बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः॥ १३५॥

क्रमाद्वारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।
महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥

धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिज्जे पाण्डुवर्णकः ।
मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥

व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।
सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुग्रुजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥

उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।
कुशी भग्नास्थिबन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥

पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।
अङ्गुल्यग्रेण चूर्णाद्यैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥

जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।
क्वाथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिक्वाथजो रसः ॥ १४१ ॥

क्वाथादेस्तु पुनः क्वाथाद् घनीभावो रसक्रिया ।
वार्तं पाटवमारोग्यं सङ्कथं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥

त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।
रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥

निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥

आमयावी समौ ग्लास्नुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।
वातार्शोदद्रुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥

श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।
किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिलौ ॥ १४६ ॥

खल्वाटः खलतिर्बभ्रुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

---

५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।
वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥

सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।
समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥

वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।
धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥

वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।
सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥

पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।
उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥

पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।
शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥

क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।
माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥

राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।
गार्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥

जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।
जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडवागणे ॥ ९ ॥

हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरभ्रकमाजकं गजादीनाम् ।
एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥

सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।
आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥

कैदारिकं तु कैदार्यं क्षैत्रं कैदारकं समम् ।
केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥

भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।
रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नड्या वन्या तृण्या ।
पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥

मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।
यमलं युगलं युग्मं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥

त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।
स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्त्र्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥

औशीरं शय्यासनयोर्लिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।
ग्रामः परोऽस्त्राद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥

पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।
पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥

गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्घतिथम् ।
बहुतिथसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥

यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।
पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥

षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।
द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥

विंशं विंशतितममेकविंशमितिवत्परं द्विधा सर्वम् ।
षष्टितममितिवदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥

शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।
ओजमयुग्मं युग्मं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥

त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।
आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिर्लेखा च मालिका ॥ २४ ॥

एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विंशतेस्त्रिषु ।
द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्युरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥

चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।
स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥

षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।
क्रमेणाथ परेणाथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥

शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।
न्यर्बुदं वृन्दखर्वे च निखर्वं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।
परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २९ ॥

व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते क्वचित् ।
वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥

व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।
अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्कुर्वृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥

पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाल्लक्षगुणोत्तरम् ।
सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥

पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।
संख्यायां द्व्येकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥

तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।
तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥

बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।
उपविंशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥

कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।
वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥

तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।
गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोध्री पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥

बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।
क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः क्वचित् ।
लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥

ताम्रकर्षकृता मुद्रा क्वचित् कार्षापणः पणः ।
स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥

ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।
साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥

त्रसरेणुभिरष्टाभिर्लिक्षा सैव मरीचिका ।
रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥

धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।
तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः।
रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥
शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च।
माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥
निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम्।
यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥
तौ द्वौ माषावर्णिका स्याल्लोहितीकं त्रिमाषकम्।
शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥
मक्षुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्यवा।
द्रक्षणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥
तृतीये ध्वानका शाणभागे मापास्तु षोडश।
सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥
बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम्।
शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥
ते द्वे चतुर्थिका वा कली निकुञ्च्याज्यपलानि च।
बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽन्ते विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥
पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले।
कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥
प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः।
तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥
द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः।
चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥
पात्रं शूर्पोवरं पिष्टं सेहिका द्व्याढकोऽस्त्रियाम्।
कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥
अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः।
कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥
तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भीं परे पुनः।
खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥
वाहं केचिच्चतुःखारीं खारीभागं च गोणिकाम्।
वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन।
धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्ताम्रस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥
दशान्येषां शतं मानं सार्धं रूप्यपलैस्त्रिभिः।
तुला पलशतं तास्तु दशार्क्षं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥
तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत्।
भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥
आचितं द्व्याचितं होढं हेलकं समकं समम्।
वाहितं भारितं चाष्टावृक्षाद्दशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥
माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः।
द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥
पाय्यं हस्तादिभिर्मानं द्रुवयं कुडबादिभिः।
पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।
सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥
स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।
प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥
परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।
विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥
अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।
विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥
दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।
वैपरीत्यं विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥
व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।
तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोज्झितिः ॥ ६ ॥
वण्टो विभागो भागोंऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।
कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥
प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।
पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥
आम्रेडनं झटप्पः स्याज्झम्पः सम्पातपाटवम् ।
कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥
यात्रा व्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।
चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥
ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।
व्रज्याऽटाट्या पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥
सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।
कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ चेपो लङ्घनलङ्घने ॥ १२ ॥
निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।
प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥
निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।
आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥
आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।
विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥
भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥
प्रत्याहार उपादानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।
समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥
अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।
उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥
विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥
संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।
धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥
विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥
प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।
प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥
परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।
प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥
उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।
विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥
संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।
सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥
विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।
शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥
बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।
परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥
लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।
प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥
संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।
संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः।
पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः॥ ३१॥
प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा।
क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्नवः स्रवः॥ ३२॥
उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा।
स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा॥ ३३॥
उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा।
भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा॥ ३४॥
यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम्।
वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम्॥ ३५॥
निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठेवनं च निष्ठ्यूतिः।
उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः॥ ३६॥
संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः।
अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७॥
प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा।
सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने॥ ३८॥
वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा।
श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना॥ ३९॥
विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम्।
आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने॥ ४०॥
सम्मूर्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा।
आवर्तनं क्राथनं स्यात् क्रथनं पाकवर्तनम्॥ ४१॥
संवीक्षणं विचयनं लोटनं तु विवेष्टनम्।
इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः॥ ४२॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
सामान्यकाण्डे धर्मकर्माध्यायः॥ २॥

गुणाध्यायः॥ ३॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ।
मसृणत्वे तु मारुङ्क्रासनौ द्रवणे द्रुतिः॥ १॥
खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात्।
गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते॥ २॥
सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक्।
कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः॥ ३॥
उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिक्कणाः।
पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः॥ ४॥
कठोरनिष्ठुरक्रूरदृढदारुणकक्खटाः।
खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः॥ ५॥
शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः।
समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः॥ ६॥
तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च।
उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः॥ ७॥
सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः।
अङ्गारो दहनस्तप्नः प्रुष्वो धूम्रः प्रतापनः॥ ८॥
तीक्ष्णश्चण्डोल्बणप्रोन्द्रकरालिविकारालिनः।
मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत्॥ ९॥
शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको धवलोऽर्जुनः।
अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः॥ १०॥
काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचका;।
रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले॥ ११॥
उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ।
कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः॥ १२॥
पिङ्गो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः।
सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः॥ १३॥
वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः।
कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः॥ १४॥

वलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः।
सितपीतहरिन्नीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥
रक्तपीतासितश्येते बोलः कारीषभस्मवत्।
उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥
शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः।
मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥
बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत्।
श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशङ्गः कद्रुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥
नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः।
इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥
सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः।
पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥
कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः।
कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥
पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः।
कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥
तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके।
स चान्योन्यानवष्टम्भान्नानावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥
कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः।
सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्जूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥
कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः।
मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥
अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः।
ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तिक्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥
कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः।
मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥
षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः।
स्युः शाडववराश्च्यूषाः श्च्यूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥
अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः।
चाटसस्तीक्ष्णचो रूषः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥
युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः।
तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तिक्तकाषाय एवं पञ्चदश द्विकाः।
क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥
सस्वाद्वम्ला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते।
कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥
तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ।
स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥
कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात्।
कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥
कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके।
अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥
कषायतिक्तौ सपट्कटू वेलानवेलजौ।
कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥
कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः।
स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥
मधुबोलः सोरणश्च क्वचिदन्त्यः करोलकः।
सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुष; पुनः ॥ ३८ ॥
कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः।
स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥
रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः।
तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोत्थुसौ ॥ ४० ॥
सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः।
जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥
तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते।
अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥
कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च।
स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥
आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः।
ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥
समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः।
षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥
मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत्।
न स्यात् पूर्वरसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः।
बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः॥ ४७॥
समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ।
मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः॥ ४८॥
जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः।
चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घुणः॥ ४९॥
कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः।
पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः॥ ५०॥
चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले।
केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः॥ ५१॥
वकुले स्यात् परिमलो वलनोऽगरुधूपके।
सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः॥ ५२॥
कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः)।
मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः॥ ५३॥
आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः।
गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः॥ ५४॥
गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः।
मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः॥ ५५॥
उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ।
शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः॥ ५६॥
स्नेहदोषे मेचटिको गूथे स्थालिकवैणिकौ।
चिस्रो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः॥ ५७॥
दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरे त्वाममांसकः।
गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि॥ ५८॥
एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः।
उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु॥ ५९॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः॥ ३॥

अर्थवल्लिङ्गाध्यायः॥ ४॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः।
स शब्दो वाच्यवल्लिङ्गो बालो वक्ता धनी यथा॥ १॥
बालो डिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः।
अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः॥ २॥
वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्स्यस्तरुणो युवा।
जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन्॥ ३॥
वर्षीयान् दशमी ज्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः।
जघन्यजो यवीयांश्च पूर्वजे त्वग्रियोऽग्रजः॥ ४॥
पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थैनैकतां गतः।
पृश्निः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः॥ ५॥
पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः।
सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः॥ ६॥
पिचण्डिलस्तूदरिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ।
वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः॥ ७॥
एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः।
केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ॥ ८॥
श्मश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन्।
किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः॥ ९॥
आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वज्ञुस्तूर्ध्वजानुकः।
संज्ञुः संहतजानुः स्यात् प्रज्ञुः प्रगतजानुकः॥ १०॥
विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ।
खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः॥ ११॥
खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः।
नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभ्रटः॥ १२॥
केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक्।
एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छ्रुतिः॥ १३॥
अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक्।
पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः॥ १४॥

शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनग्नकः ।
क्षपणश्रमणौ नग्नो नग्नाटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥

आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।
हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥
प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।
धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥
अधीरे कातरत्रस्नुभीरुभीरुकभीलुकाः ।
दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥
प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।
कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥
अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।
गर्विते स्तब्ध उद्ग्रीवो बाह्रो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥
मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।
अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्गतौ ॥ २१ ॥
नीचे तु हीनापशदपामरेतरबर्बराः ।
नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥

कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।
ढौण्डुको ढण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥

क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यंसकवञ्चकौ ।
कौक्कुटो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥
ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।
कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥
नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।
अस्थिरप्रेम्णि गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥
अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।
स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥
परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।
निघ्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥
अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥

यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।
परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोत्सुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।
प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥

प्रणेयः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।
क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥

सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।
हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥
दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥
कामुकः कमिताऽभीकः कम्रः कमयिताऽभिकः ।
तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥

लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।
बुभुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥
पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तर्षितः सतृट् ।
मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥
नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥
दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।
स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥

लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।
निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥
उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्करिष्णुस्तु मण्डनः ।
भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥
उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।
स्थास्नुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥
वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।
आशंसुराशंसितरि वन्दारुरभिवादकः ॥ ४३ ॥
जागरूको जागरिता श्लक्ष्णवाक् तु प्रियंवदः ।
शक्लो मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥
वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।
वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥

जल्पाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गर्ह्यवादी स्याज्जोहलोऽस्फुटभाषणः ।
अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥

नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।
कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥
व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।
पराह्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥
सर्वान्नीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौल्किकः ।
आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ ५० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।
ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥
अद्रुते धीरविस्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।
कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥
दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।
आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥

वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।
चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥
मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।
क्षेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥

लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।
उदारोदीर्णधन्यास्तु महात्मा सुकृतीति च ॥ ५६ ॥
समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।
आढ्यस्त्विभ्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥
अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।
ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥
कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।
आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥
अपि दुस्स्थक्रूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।
मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥

आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।
जगत्त्रसचरप्राणमिषदिङ्गच जङ्गमम् ॥ ६१ ॥
स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।
वा क्ली प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपरार्ध्यवत् ।
श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥
परार्ध्यं ग्रामणीः स्पर्ध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।
उपाग्रस्तु गुणः पुंसि क्लीबे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥

तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।
पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥
निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।
विमले वीध्रं मलिने द्वौ कच्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥
आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।
आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विक्लवो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥
विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।
व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी वधोद्यतः ॥ ६८ ॥
शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।
द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥

चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।
गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥

वध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।
निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥

कर्मक्षमोऽलङ्कर्मीणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
कार्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥

कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
निर्वीर्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥
क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।
स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥

गर्ह्योऽपकृष्टचेलार्वरेफयाप्याधमावमाः ।
प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥
जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।
पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥
अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।
अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥
करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ।
स्थास्न्वेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्ठोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७९ ॥
विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु।
स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥
प्रांशूच्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छ्रिताग्रकम्।
न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥
विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम्।
वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥
चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम्।
आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥
क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम्।
प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥
अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु।
समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥
अखण्डकृत्स्ननिश्शेषपूर्णविश्वसमानि च।
खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥
सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम्।
पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥
नूत्ने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः।
शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥
सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः।
ह्यस्तनश्वस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥
कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः।
न्यक् स्यादधोमुखं न्युब्जमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥
उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यगवागपाक्।
विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥
दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम्।
दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥
यः सहाञ्चति सध्र्यङ् स विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति।
देवानञ्चति देवद्र्यङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥
अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम्।
उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम्।
चलितप्रेङ्खिताधूतवेल्लिताकम्पिता धुते ॥ ९५ ॥
रुचिते हृद्यलषितवाञ्छितेष्टेडितेहिताः।
संवीतं स्याद् वलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ९६ ॥
नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते।
बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितं सितम् ॥ ९७ ॥
सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते।
मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥
लब्धाप्तासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते।
प्रयत्ते मुदितप्रीतहृष्टाः सुहिततृप्तवत् ॥ ९९ ॥
आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोद्धृताः।
ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥
मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत्।
त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुज्झिताः ॥ १०१ ॥
कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्णच्छातच्छितार्दिताः।
स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥
प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत्।
भजमाने प्राप्तयुक्तन्याय्यान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥
न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः।
उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥
शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम्।
अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥
पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताःशस्ते।
वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णोपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥
उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपिताद्र्राणि सार्द्रवत्।
स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥
ग्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः।
परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥
प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते।
सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्रुतं स्नुतम् ॥ १०९ ॥
अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृब्धे ग्रथितमुद्रितौ।
सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्तृते विसृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ।
वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥
ऊतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम्।
उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥
गुण्डितं रूषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम्।
ज्ञप्तं तु ज्ञपिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥
पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्)।
दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्वान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥
पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते।
निष्पक्वे क्वथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥
मुषिते लुण्ठितं यस्ते निसृष्टं वृद्धमेधिते।
काचितं शिक्यिते दिश्यं दिग्भवेऽभ्रभवेऽभ्रियम् ॥ ११६ ॥
यज्ञियं यज्ञकर्मार्हे चक्षुष्यं चक्षुषे हितम्।
तत्तद्गात्रभवे दन्त्यं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥
पुंसः पौंस्नं स्त्रियाः स्त्रैणमग्नेराग्नेयमित्यपि।
दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥
व्रीहिणो व्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः।
निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥
छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम्।
गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाश्येऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥
समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक्।
तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥
आभा प्रख्योपमाभिख्या प्रकारः सन्निभं निभम्।
निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥
परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि।
वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥
अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यृजुः।
सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥
अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च।
विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम्।
विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥
प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये।
अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥
अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि।
एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥
अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च।
साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥
नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः।
अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥
अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम्।
भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥
तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत्।
वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥
परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत्।
सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥
प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम्।
सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥
शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम्।
न्युङ्खं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥
अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दह्रं दहरमर्हकम्।
किञ्चिन्मात्रं मितं दभ्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥
अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम्।
चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥
विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा।
पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥
नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु।
उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशासविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्वोवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्श्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे
अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

---

६. अथ द्व्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।
द्व्यक्षरास्त्र्यक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।
संग्रहो द्व्यक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥

अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥
अट्टावतिशयक्षौमावर्घौ पूजाप्रतिक्रयौ ।
अर्याः शास्तृस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥

अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्कश्चिह्नेऽन्तिकोरसोः ।
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥

यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥

इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।
इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥
ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्त्तिकौ ।
ऋषिस्तु वेदे भृग्वादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥
ओघः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।
कन्तू कुसूलकन्दर्पौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्केभवानराः।
गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ १३ ॥
क्रतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः।
कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥
कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः।
कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिक्यदृग्रुजोः ॥ १५ ॥
उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्लेदौषधिशशाङ्कयोः।
कोणाः शब्दाश्रिलगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥

विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे।
काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥

कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्यर्केष्वनिलाः खगाः।
खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥
गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः ग्रावाणौ पर्वतोपलौ।
तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥

गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः।
गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥
ग्रन्थो- द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः।
गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥

कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशे महीगुणे।
घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥
चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके।
चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥

वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ।
टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः प्लीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥
तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तद्दिण द्युशिल्पिनि।
मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥

द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे।
दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥
दवदावौ वनारण्यवह्न्योः खगार्कयोर्द्युवा।
धवो वृक्षे नरे पत्यौ ध्वाङ्क्षः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥
धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।
महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः।
नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥
ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे।
न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥

नाशः पलायने मृत्यौ परिध्वंसेऽप्यदर्शने।
नग्ना वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥
पीयुः काल उलूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे।
पुण्ड्राः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥

प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः।
पवी वाताम्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥

पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डिः कल्केऽपि तैलजे।
पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥
द्यूते विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने।
पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥
पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके।
प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥
पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने।
क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥
प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि।
इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥

श्वेतार्के डाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः।
बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥

बाष्पोऽश्रूण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः।
भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥
भवो भद्रे हरे प्राप्तौ सत्तासंसारजन्मसु।
भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिम्ण्यपि ॥ ४१ ॥

भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ।
विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥
भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु।
पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥
भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः।
फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृगादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।
मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्ख्यमूढताः ॥ ४५ ॥
मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।
मूत आतञ्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥
मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।
यन्ता हस्तिपके सूते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥
ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्रब्धघातिनि ।
प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतियुक्तिषु ॥ ४८ ॥
रसो रागे विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।
रेतस्यास्वादने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥
रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।
राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥
रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।
रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिगुः ॥ ५१ ॥
भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।
वंशः पृष्ठास्थ्नि गेहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥
नासोर्ध्वास्थ्नीक्षुभेदे च वह्निरुद्दिण हयेऽनले ।
वलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥
वेणू बेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।
वालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्मापदेशयोः ॥ ५४ ॥
विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।
विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥
वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोद्दण्यग्रन्थे पुमिन्द्रयोः ।
वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥
वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।
शम्भुर्धातृहरार्हत्सु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥
शम्बो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रगे ।
शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुक्रोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥
शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥
कुक्कुटेऽग्नौ मयूरेऽशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।
पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

ष्ट्यूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।
सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्ण्वर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥
राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।
सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥
सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।
स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥
सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।
स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥
स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्वारोहसूतयोः ।
सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥
सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे क्वचिन्नपुम् ।
सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥
स्तूपा वायुरणोच्छ्राया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।
हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥
हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।
जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्ष्णिकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥
वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।
हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
द्व्यक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।
अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्ठी फलास्थ्यपि ॥ १ ॥
आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।
आशीरुरगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥
आलिः सेतौ सखीपङ्क्त्योराशा दिगतितृष्णयोः ।
आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाग्विडा ॥ ३ ॥
इलाऽप्येतासु चार्घे च स्यादिज्या यागपूजयोः ।
इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुषु ॥ ४ ॥
अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।
ईहा तु लिप्सोद्यमयोरूतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥
ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेषादिलोमसु ।
हिंसाविक्षेपयोः कीर्णिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥
कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।
कर्मी हाटकपुत्र्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥
कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।
काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥
क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।
करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥
काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।
महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥
कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।
गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥
घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकर्णिका ।
चिन्ताचर्चिक्ययोश्चर्चा चूर्णिर्ग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥
चापाग्रे पिष्टके चूलिश्छर्दिरुद्वान्तिरेतसोः ।
छाया त्वनातपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥
अलक्ष्म्यग्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोल्यृक्षभेदयोः ।
जिह्वा वाग्रसनार्चिष्षु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥
तन्त्रीर्गुडूचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।
तन्दूर्द्रोणिप्लवे दर्व्यां वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥
तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशसंशययोस्त्रुटिः ।
तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥ १७ ॥
दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।
द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥
दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूम्युपमातरि ।
धनुः सुस्त्रीधनुर्ज्यासु धाना बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥
धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।
धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥
निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।
भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥
पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सश्मश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।
छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥
क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।
प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥
प्रसूर्जनन्यामश्वायां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।
पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥
पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।
प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥
भसदौ गुह्यविट्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।
भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्ञायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥
भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।
मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मृत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मयाद्यासु प्रसूमयोः ।
मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥

पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।
गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥

राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥

प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।
रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तिन्त्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥

रेटिर्वह्नेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।
रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्भेदशाखयोः ॥ ३२ ॥

लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।
वलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥

वर्ध्री स्नायुनि नध्र्यां च व्रज्या पर्यटने गतौ ।
विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥

वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।
वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥

वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽब्धिजलवर्धने ।
काले सीम्नि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥

वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु दृग्रुजि ।
अश्वावर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥

शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।
शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥

शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।
श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥

शिखा ज्वालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाग्रमौलिषु ।
शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥

शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।
संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।
सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥

संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।
संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥

सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।
सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥

गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।
रश्ममेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥

स्थूणा सूर्म्यां गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।
हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
द्व्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।
अग्रं पुरःशिखामानश्रैष्ठ्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥
मुष्के पद्यादिकोशेऽण्डं दुःखैनोव्यसनेष्वघम् ।
अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥
वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।
उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोञ्छयोः ॥ ३ ॥
ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।
क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥
कुण्डं स्थाल्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।
पिण्याको नम्रहूः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥
क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।
पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥
चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।
संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥
चैत्यं चिताङ्के बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।
चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सद्मनि कैतवे ॥ ८ ॥
छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।
जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥
जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।
ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालादृक्पुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥
तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।
शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥
एकस्यैवोभयार्थत्वे कुडुम्बव्यापृतावपि ।
तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्तृती ॥ १२ ॥
त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।
तीर्थं मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥
पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।
तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।
द्रव्यं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥
द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।
धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥
नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।
नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेपसोः ॥ १७ ॥
पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।
शब्देंऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥
पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।
पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्जल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥
पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।
पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥
पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।
पाथींषि स्वर्गचन्द्रार्कौ पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥
पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।
नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥
बीजं शुक्ले फलास्थ्न्यग्रे भर्मणी स्वर्णवेतने ।
वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥
भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।
भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥
माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्नयोः ।
मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥
मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।
गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥
रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।
रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥
रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।
सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्तवे रजः ॥ २८ ॥
ललं पक्ष्मत्र उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।
स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥
लिङ्गं शेफसि वेषेंऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।
वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चीरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।
व्रतं विष्णवृतुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥
वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।
वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥
शस्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।
शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥
शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।
शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥
यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।
सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥
स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।
सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥
स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।
हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
द्व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थ्योऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिकृष्टयोः ।
क्लृप्तेऽर्घोयार्घ्यमर्घार्हेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥
अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।
आद्यमादिभवे भद्रेऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥
मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।
कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥
कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।
क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥
गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।
क्लिन्नाक्षे क्लिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिल्लवत् ॥ ५ ॥
चोद्यं चित्रे चोदनार्हे चारु चित्रवचस्यपि ।
जडो जाल्मश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥
ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।
जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥
द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।
दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥
धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।
न्यक्षं क्लिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥
नीचं खर्वे निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।
प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥
बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।
मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥
मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।
मृद्वतीक्ष्णे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥
याप्यं गर्ह्ये यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।
न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥
रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।
रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।
लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥
लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आकुले ।
वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीपयोः ॥ १६ ॥
विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।
शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥
शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।
सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥
सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।
स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥
मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।
मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्ह्ययोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
द्व्यक्षरकाण्डे अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।
उन्नेयमर्थवल्लिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥
अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।
शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥
अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।
प्रदेशेंऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥
अविर्भूपुष्पवत्योः स्त्री वायुप्राकारभास्सु ना ।
अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥
अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।
नार्धमासेऽणिरक्ल्यश्रौ रूप्येऽक्षाग्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥
अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्वन्तौ हयकुत्सितौ ।
अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भाज्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥
अस्त्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेऽश्रुणि ।
आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वामोऽपक्वेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥
इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।
उशिर्नाग्नावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥
उस्रः किरण उस्रा गौर् ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।
कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥
कल्को ना सिह्लके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।
कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥
कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।
काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्ह्येऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥
ग्रन्थौ स्तम्बे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।
क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥
क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।
कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥
अयोघनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।
कृष्णं सीसाघलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूद्रे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।
कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थौघे गृहे तनौ ॥ १५ ॥
गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।
कोलं बदरतक्कोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥

कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खञ्जे प्लवे किटौ ।
कायो लक्ष्ये तनौ बृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥
कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।
श्रोण्यां भृशे किलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥
किष्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।
कीलोऽक्ली कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥

पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कत्थने कुशे ।
कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये क्ली कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥

युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं क्ली विहितेऽर्थवत् ।
क्ष्वेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥
क्षेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।
स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥
क्रोडं क्ली कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।
औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥

दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेक्रे गृहे नषण् ।
कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥
अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।
खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥
गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।
भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥
गुडौ पिण्डेक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
गुरुर्गोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥
मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।
गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नाम्नि कुलेऽचले ॥ २८ ॥

गडुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।
गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥
घनाः कठिनसङ्घातमेघकाठिन्यमुद्गराः ।
चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।
चुम्रो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥
छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्मं मन्देऽघवक्रयोः ।
जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥
ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।
जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥
त्रिषु जीवति मौर्व्यां स्त्री स्याज्जीर्णो वस्त्रवृद्धयोः ।
झषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥

तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।
तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥
क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्तौ समौक्तिके ।
उडुदृक्ध्यध्ययोरक्ली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥
ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।
तीक्ष्णमुष्णे क्ष्णुते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥
कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।
दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥
मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।
दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥
दंष्ट्री ग्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके किटौ ।
परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥

दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।
दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥

दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।
धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥
न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढ्राङ्कयोर्ध्वजः ।
धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृक्षे स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥
ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्रुचोः ।
क्ली तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥

निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।
वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्विन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥
न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।
नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।
पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥
पद्मोऽस्त्र्यब्जेऽष्टकायां क्ली सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।
ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥
परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।
पार्ष्णिरुन्मत्तनार्यां स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥
पुमांस्तु पूतनाकस्त्र्यां पापं स्यात् क्रूरपाप्मनोः ।
पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे क्ली सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥
पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।
स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥
स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।
लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥
फली ताम्रादिफलके बर्हिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।
ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृग्वादिविप्रर्त्विग्यज्ञधातृषु ॥ ५३ ॥
अर्केऽग्नौ क्ली तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।
बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥
बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।
बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥
प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।
साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥
बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।
बालोऽक्ली नीलझिण्ट्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥
भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्यार्कभूतिषु ।
कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥
स्वादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।
भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभ्वि कातरे ॥ ५९ ॥
अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।
मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापटुसूर्यजाः ॥ ६० ॥
क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।
चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥
अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिञ्जरे ।
मात्रा परिच्छदेऽर्थांशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे ।
मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥
मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नपण् ।
मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥
मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।
ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥
युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।
योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥
योग्यं यन्त्रक्षमापूप्यानोपायिषु चन्दने ।
योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥
राजते भूषणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।
त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥
राष्ट्रोऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।
लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥
वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।
कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥
वशा करिण्यां वन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।
वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥
वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृतौ ।
त्रिष्वग्र्ये क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥
वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।
बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥
व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।
शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥
वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिंसयोः ।
वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥
निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्नीरुजोस्त्रिषु ।
वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥
त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।
श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुंधर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥
वसुर्ह्रदेऽग्नौ योक्त्रेंऽशौ वसु तोये धने मणौ ।
विश्वं जगति सर्वस्मिंस्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।
वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृषि स्त्रियः ॥ ७९ ॥
वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योर्गृहे सीमसुरुङ्गयोः ।
वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥

वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।
विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥
वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।
गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥
शङ्खोऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।
अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥
शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।
शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥
भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।
चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥

शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।
शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥
क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।
पश्वङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥
माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।
ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्द्यूते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥

पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।
श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥
सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।
शौण्डी जलदमालायां शौण्डौ समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥

शाको विष्ठा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।
शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥
शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरौ विक्रान्तकुक्कुटौ ।
शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूप्ययोः ॥ ९२ ॥

शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।
सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥
आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।
प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।
परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ९५ ॥
स्पर्शः संस्पर्शने स्पष्टर्युपतापप्रदानयोः ।
साधुस्त्रिषूचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥
सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।
स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥
सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।
सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ९८ ॥
सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।
विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुकाग्निषु ॥ ९९ ॥
कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।
हद्यो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्न्युपलेपने ॥ १०० ॥
हत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।
यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
द्व्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्व्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यू अरत्नी हस्तकूर्परौ ।
अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥
आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्बले ।
आग्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥
आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।
आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥
गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यापृतावपि ।
आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥
आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।
आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥
आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।
आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥
श्रोण्याङ्क्वारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।
आमोदौ हर्षसौगन्ध्ये आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥
आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।
आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥
रुग्भीतितापेष्वातङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।
तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥
अप्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।
ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥
उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुटुम्बव्यापृतेऽपि च ।
उत्सवस्त्विच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥
उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।
उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥
ऊर्णायुरूर्णनाभे स्यान्मेषतल्लोमकम्बले ।
ऋषभोऽग्र्ये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।
वेणौ द्रुमाङ्गे रोमाञ्चे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥
कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।
कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥
क्षारको मत्स्यपक्ष्यादिपिटके पुष्पजालके ।
दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥
कौशिको गुग्गुलूलूकशक्रर्षिष्वाहितुण्डिके ।
कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥
कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।
कारुजः कलभे नाके क्षवथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥
कर्परोऽस्त्रौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।
शरे किंशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु झषेऽपि च ॥ १९ ॥
कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।
कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥
वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।
कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥
किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।
खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥
खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।
गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥
अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।
गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥
चक्रुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।
चिकिरोऽहौ गेहबभ्रौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥
जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।
श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥
जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।
जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥
त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।
तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥
तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।
त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
दिवौकाश्चातके देवे द्रुघणौ धातृमुद्गरौ ॥ ३० ॥
दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।
द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥
द्रुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।
दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातृलोकार्काः ॥ ३२ ॥

धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।
निवेशौ शिबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥
निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।
निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥
ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।
निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥
नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।
निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निर्गतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥
नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।
निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥
द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।
निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥
निह्नवः स्यादविश्वासेऽपह्नवे निकृतावपि ।
निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥
प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।
पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारेऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥

परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।
परिघाते मूढगर्भे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥
परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
पर्जन्यो गर्जदभ्रेऽभ्रध्वाने शक्रेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥
प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्छासंवर्तयोरपि ।
प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥
प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।
प्रणयः स्यात् परिचये याच्ञायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥
प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।
पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिह्लके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।
पुरुषो धातृपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥
पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमाञ्चे हीरके क्रिमौ ।
पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥
प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।
पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहः पुनः ।
तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्द्यर्ग्वधेषु च ॥ ४९ ॥
प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।
आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥

प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।
विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥
पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।
गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥
प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।
पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥
पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।
प्रतिघौ रुट्प्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥
प्रसादौ स्वाच्छ्यानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
प्रदोषौ दोषरात्र्यंशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥

वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।
भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥
रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।
पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥

पृथुकश्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।
भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ।
भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यू विष्णुभास्करौ ।
भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ।
भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्ता तनौ पुमान् ।
राजभेदाहिमार्जारश्वार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥
धुत्तूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।
सिक्थे वसन्ते धुत्तूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरूकौ भेककेकिनौ ।
मिहिरा वायुमेघार्को यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥
युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।
रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥
रुचको भूषणे दन्ते रुवथः कुक्कुटे ध्वनौ ।
वञ्चथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वखुरे खगे ॥ ६४ ॥
व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।
वाहसौ वह्न्यजगरौ द्रुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥

विस्रम्भौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।
विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखिकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥
रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।
विश्वात्मार्केऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥
स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।
विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥
युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।
विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥
विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।
विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥

विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।
वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कार्त्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥
वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।
विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥
शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।
बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥
अध्वर्यौ च श्रपाय्यः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥
मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करौ ।
स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥
सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥
सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।
समिको वृक्षवल्मीकौ सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।
सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥
स्वीकारोच्छ्रायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।
सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥
आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।
प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥
स्थापत्येऽधिपतौ तक्ष्णि बृहस्पतिसवी च यः ।
समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥
सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।
समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥
सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।
सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥
हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दार्चिष्षु हायनः ।
महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
त्र्यक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमतिः पशुवङ्क्ष्णयां जलपात्रे च दारवे ।
अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥
अभिख्या त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।
अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥
आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।
उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥
कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।
कणिका तिलकाण्डेंऽशे गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥
करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।
कूर्चिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥
तुर्येंऽशे मापदण्डस्य माषस्यापि च काकणी ।
विंशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥
गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।
वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥
पार्यां कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्वरी ।
जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥
जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।
छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि झल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥
चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।
पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥
निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।
नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥
नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।
प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥
छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।
पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥
अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।
गृहादिधिष्ण्ये पिण्डे च जङ्घामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥
परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।
प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।
प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥
पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु कारिण्यपि ।
बृहती पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्यां च वाचि च ॥ १७ ॥
भित्तिका तु शतावर्यां वज्रे चाप्यथ मेखला ।
श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥
महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।
पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥
गव्यच्चे रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।
रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥
पथ्यायां गव्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।
नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥
विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोमिश्च वालुका ।
बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥
वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।
वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥
वीणा विपञ्ची सैवाल्पदण्डा सा नवतन्त्रिका ।
वृषल्यृतुमती कन्या शूद्रा वन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥
वनिता स्निग्धनार्याञ्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।
वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शक्करी ॥ २५ ॥
शष्कुल्यपूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।
शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥
शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।
समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥
सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।
संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥
सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।
संवित्ती ज्ञानसंवादौ ह्रादिन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥
हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
त्र्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।
अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥
अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।
अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥
अनूकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।
स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोंऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥
रेतसीन्द्रियमक्षे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।
उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योर्वनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥
उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।
उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥
कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥
कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।
कीलालं रुधिरे तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥
कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।
कैतवं कपटे द्यूते कूपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥
करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।
स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥
रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।
कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥
कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।
कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥
कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुर्धनुर्धरः ।
केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥
कौलीनं प्राणिभिर्द्यूते कुलीनत्वापवादयोः ।
गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥
सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।
ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्युपप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।
जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥
तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।
तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥
तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।
दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशास्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥
दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽक्षिण च ।
धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्ष्मयोः ॥ १८ ॥
नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्क्षणं च वरस्त्रियाः ।
निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥
निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।
निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥
पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्दमभेदयोः ।
प्रयाणं गजहृक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥
प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।
पातालं लोक और्वश्च पतत्रं खे गरुत्यपि ॥ २२ ॥
नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।
प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥
सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।
पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥
खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥
वाह्लीकं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।
भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तृणेऽपि च ॥ २६ ॥
मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।
मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥
यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्यापनेऽपि च ।
लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥
लाङ्गूलं वालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।
वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥
व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।
वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।
व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥
व्यसनं शक्तिविपदोर्दैवानिष्टफलेऽहसि ।
पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥
विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।
वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥
वेष्ठने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।
शालूकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यघे ॥ ३४ ॥
शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।
वाङ्नियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥
साधनं शेफसि धने सिद्ध्युपायानिवृत्तिषु ।
मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥
सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।
मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥
मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।
सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥
हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।
हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥
हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
त्र्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अथैवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभिकौ ।
प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥
आविद्धौ क्षिप्तकुटिलावादृतौ सादरार्चितौ ।
विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥
आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।
आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥
इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।
उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डके ॥ ४ ॥
उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।
वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥
उदूढावूढपृथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।
महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥
अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याय्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।
उत्तालो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्भटे ॥ ७ ॥
करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥
द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।
क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥
कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्यया युते ।
क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥
देहान्तरचिकित्सार्हे गरले पारदारिके ।
चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥
जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।
पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥
दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हृते ।
निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥
निष्ठ्यूते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।
निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥
निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
प्रणाय्योऽसम्मतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे।
प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥
पिण्डिलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च।
प्रतीक्ष्यौ प्रतिपाल्याचर्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥
प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ।
सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैधितौ ॥ १८ ॥
पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ।
पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १६ ॥
मिश्रास्निग्धौ च परुषौ प्रगाढो गहने दृढे।
पामरोऽपशदेऽज्ञे च बालिशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥
बीभत्सौ क्रूरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ।
बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥
भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिकिङ्करौ।
मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥
विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ।
विलीनौ लीनविद्रुतौ वेल्लितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥
विगतौ वीतनिस्प्रभौ विविक्तौ शुद्धनिर्जनौ।
विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥
विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ।
वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥
पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते।
वदान्यो वल्गुवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥
विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः।
विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्लिष्टविश्लिष्टयोरपि ॥ २७ ॥
संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते।
मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥
साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च।
तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २६ ॥
सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ २६३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
त्र्यक्षरकाण्डे अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्यूह्यं स्वयं क्वचित्।
अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥
क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ।
विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥
अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ।
धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥
अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः।
अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥
अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे।
नेत्ररोगे चार्जुनं तु तृणे हेम्न्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥
विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ।
अव्यक्तरागे शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रवौ ॥ ६ ॥
अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने।
अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेम्नि गोरसे ॥ ७ ॥
क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुडूच्यां मद्यभिक्षयोः।
आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययो ॥ ८ ॥
अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे।
क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये ताक्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥
अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिरेऽपि च।
न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥
लाजेष्वभ्योषमभ्योषाः साज्याम्भःपेयसक्तवः।
कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कस्तूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥
अविषो निर्विषेऽम्भोधाववविषो दिवि पुंसि वा।
अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥
प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः।
अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडूची चामराः सुराः ॥ १३ ॥
कल्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे।
अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्गणयोर्द्रुते ॥ १४ ॥
अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ।
विद्युत्पव्योरक्षयशनिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।
आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥
कोट्टारे कूपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।
शर्करायां दृषत्पुत्रे स्त्र्यस्त्र्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥
उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।
स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥
करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।
करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥
भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।
अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥
करटो दुर्दुरूटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।
कल्याणी क्षमोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥
रागे क्वाथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।
कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥
कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।
कुहनो मूषिके सेर्ष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥
कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।
कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥
कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।
कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥
केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।
कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥
रक्ताब्जेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।
अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥
तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पणे ।
कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥
युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।
कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥
अस्त्री त्वह्नोऽष्टमे भागे तिलेषु छागकम्बले ।
दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥
कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।
किञ्जल्कः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।
कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥
कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।
खनको भूमिवित्तज्ञे मूषिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥
गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुदध्वनौ ।
गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूर्तौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥
पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।
कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥
ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।
गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥
गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।
वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥
स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।
चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥
चपल; पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।
चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥
जृम्भितं जृम्भणोत्फुल्लविवृद्धेषु विचेष्टिते ।
जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥
जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।
टगरष्टङ्कनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥
स्त्री नौनद्योर्व्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।
भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिदिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥
तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।
तातगुः शूद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥
तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।
तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥
न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।
दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥
त्रिष्ववाक्सरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।
कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥
स्त्री पुनर्भ्वास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।
स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्यां स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये।
धर्षणं सुरते धार्ष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी॥ ४८॥
चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि।
धौताञ्चले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः॥ ४९॥
धिषणा स्त्री धियां गौर्यां स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पतौ।
नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः॥ ५०॥
निधनोऽस्त्री कुले नाशे निस्त्रिंशः क्रूरखड्गयोः।
नालीकमब्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः॥ ५१॥
केशादिशौक्ल्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे।
पटलं दृग्रुक्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे॥ ५२॥
पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे।
प्रवणो दक्षिणे प्रह्वे क्रमनिम्ने चतुष्पथे॥ ५३॥
प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु।
मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः॥ ५४॥
वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे।
प्रसूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान्॥ ५५॥
प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि।
पाटला गवि पाटल्यामाशुव्रीहिस्तु पाटलः॥ ५६॥
पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि।
त्रिषूर्ध्वबाहुपुंमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः॥ ५७॥
पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ।
पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये॥ ५८॥
मन्त्रे दध्नि ब्रह्मसूत्रे हेम्न्मर्थे कलशे कुशे।
पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे॥ ५९॥
फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः।
फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे॥ ६०॥
आमत्रे क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः।
बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ॥ ६१॥
स्त्री स्यात् पृथिव्यामुस्रायामेलायां कृत्तिकासु च।
भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि॥ ६२॥
उद्याने मलयं ना तु गिर्यंशगिरिभेदयोः।
मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु॥ ६३॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि।
मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे॥ ६४॥
दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम्।
त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः॥ ६५॥
उपसूर्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके।
मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ॥ ६६॥
पित्रादेः कन्वयाऽऽप्तेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम्।
युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्चले॥ ६७॥
संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः।
रसनं क्ली कषायेऽन्ने द्रवे स्नेहे विषे फले॥ ६८॥
निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना।
रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः॥ ६९॥
वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते ह्रदे।
श्वेते हारेऽप्यथोष्ट्रेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत्॥ ७०॥
रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणग्राव्णि पारदे।
रौहिषं रक्तकत्तृणे मत्स्यभेदे मृगे च ना॥ ७१॥
लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहृदाद्यभिलाषयोः।
ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे॥ ७२॥
श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु।
लोचको मांसपिण्डे स्यान्नीलिन्यां चर्मणि भ्रुवि॥ ७३॥
रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूर्तौ तु वञ्चकौ।
विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये॥ ७४॥
विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान्।
विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना॥ ७५॥
अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम्।
अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे॥ ७६॥
त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु।
भेक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दर्दुरे न षण्॥ ७७॥
वयःस्थाऽऽमलकीपथ्याब्राह्मीषु तरुणे त्रिषु।
वलजा वरनार्यां च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना॥ ७८॥
वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्त्र्यङ्गलेपने।
दुःखे विलक्षे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना॥ ७९॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।
विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानेव पतत्रिणि ॥ ८० ॥
विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।
विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥
विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।
विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गगजदन्तयोः ॥ ८२ ॥
वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।
स्कन्दे विशाख ऋक्षे स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥
पापेऽपि वृजिनं केशे पुमानिन्दुस्तु शार्वरः ।
स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योर्दैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥
शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।
शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥
शरत्पक्कादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।
गम्भार्यां कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥
यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंस्रे त्रिषु शार्वरः ।
करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥
समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।
संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥
स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।
सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥
छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।
सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥
सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।
बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥
सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।
शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिसङ्कटौ ॥ ९२ ॥
सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।
पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥
सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

---

८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।
अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥
अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने । २ ॥
अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥
अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।
अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ।। ४ ॥
पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।
अवरोहोऽवतरणं शाखाप्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥
अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।
अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥
अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।
अपदेशस्तु लक्ष्ये स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥
अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।
पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥
अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।
अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिंसयोः ॥ ९ ॥
अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।
अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥
स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।
अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥
संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।
कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे झषे ॥ १२ ॥
अनिमेषोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।
स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥
नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।
अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौ गुह्यगूधाववस्करौ ।
कूर्मेशेऽब्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥

अशिरस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।
आशोचनी तु वह्नीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥

ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।
उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥

उपक्रमश्चिकित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।
उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥

उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।
स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥

दात्यौहाली कलङ्काणौ खङ्गिखङ्गौ करालिकौ ।
कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥

कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।
ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥

घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षुकाम्बुदे ।
चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥

देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।
तमोपहोऽप्यथोलूके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥

दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।
दर्दुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।
पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥

अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।
रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥

द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।
काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥

परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।
परिवारः प्रावारेऽपि नृपार्हार्थेऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥

परिवर्तो जगन्नाशे निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।
पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छदे ॥ २९ ॥

पत्नीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।
परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३०

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।
स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥

प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।
मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥

विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।
प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥

प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूपृष्ठे पतद्ग्रहे ।
दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्टर्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥

दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।
ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥

धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।
महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥

महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।
रजसानू घर्ममेघौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥

लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।
लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्मृगे ॥ ३८ ॥

बाडबेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो हये हरौ ।
विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥

वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।
वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥

व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।
त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥

वारवाणिज्यौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।
वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्वर्का विरोचनाः ॥ ४२ ॥

व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिवणिज्ययोः । ४३ ॥

वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।
शङ्कुकर्णौ गर्दभोष्ट्रावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्कौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ।
सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये॥ ४५॥

स्तनयित्नुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः।
उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके॥ ४६॥

समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च।
समाह्वयस्तु पद्यार्द्यैर्यूते नामनि संयुगे॥ ४७॥

सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः।
स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते॥ ४८॥

सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः।
हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे॥ ४९॥

(इति चतुरक्षराः)

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ।
आशुशुक्षणिरर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः॥ ५०॥

शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः।
आम्रे चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि॥ ५१॥

ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने।
ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके॥ ५२॥

धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः।
गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः॥ ५३॥

प्राचीनबर्हिरिन्द्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ।
मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात्॥ ५४॥

कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च।
विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः॥ ५५॥

निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च।
हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने॥ ५६॥

(इति पञ्चाक्षराः)

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च।
आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः॥ ५७॥

यादस्पतिश्च तावब्धावप्यथो यक्षगुह्यकौ।
धनदेऽप्यथ वृत्तेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः॥ ५८॥

भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्रे जम्बूकनीपयोः।
वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे॥ ५९॥

अंशौ च केतुसूदमाग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ।

(इति विषमाक्षराः)

आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः॥ ६०॥
पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ॥ ६०½॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः॥ १॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।
अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गदद्रुहि ॥ १ ॥

धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।
प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥

अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।
रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥

उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।
ऋष्यप्रोक्ता शतावर्यां कण्डूरातिबलर्धिषु ॥ ४ ॥

फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।
वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥

श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।
दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥

गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।
प्रत्त्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥

मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।
चुच्छुन्दर्यां राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥

वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।
गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥

समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।
गौर्यामपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥

गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

(इति चतुरक्षराः)

गोरक्षजम्बूर्गोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥

चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।
योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥

वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफघ्न्यां प्रावृषायणी ।
हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।
पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्र्युग्रा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्यां कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।
रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥

(इति विषमाक्षराः)

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वम्रिकायोषितोः स्त्रियौ ।
उपायद्वारयोर्द्वाः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥

धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।
ज्या पृथिव्यां च मौर्व्यां च स्वर्व्योम्न्योर्द्योर्दिवावुभौ ॥ १७ ॥

ऋशब्दः स्याद्दिव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।
उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् स्रुक् स्रुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥

लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।
रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु तृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥
यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वग्गन्धद्रव्यवल्कयोः ॥१९३॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।
अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥
आभ्याधानमभिन्यासे बह्वर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।
अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥
समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।
आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥
आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।
आराधने तोषणाप्ती घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥
जन्मोद्गमावुत्पतने रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।
उद्वासने वधोद्वासावप्युत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥
स्यादुद्धरणमुद्वान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।
तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥
त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।
निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासधनार्पणे ॥ ७ ॥
निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।
शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥
प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।
पारायणं कार्त्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥
प्राणिद्यूतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।
शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥
रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।
विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥
संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥
समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।
(इति चतुरक्षराः)
अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्चले ॥ १३ ॥
स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
दुग्धाग्रे दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।
(इति पञ्चाक्षराः)
पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥
आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।
शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥
यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।
गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥
स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।
पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशाप्स्वपि ॥ १८ ॥
(इति विषमाक्षराः)
खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८३ ॥
(इत्येकाक्षरः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभिधेयवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

(अर्थवल्लिङ्गाध्यायः)

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।
अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥
अभिपन्ना विपन्नाप्तग्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।
अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भर्त्सितेऽपि च ॥ २ ॥
निश्रिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।
अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥
अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।
उज्झिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥
स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।
उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥
उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।
कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥
दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।
परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥
प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।
विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥
समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।
पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥
पौरुषेयं वधे पुंसो वृन्दे कार्यविकारयोः ।
ब्रह्मबन्धुरधिक्षेप्ये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥
यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्झितेऽपि च ।
लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥
विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।
मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥

(इति चतुरक्षराः)

कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।

(इति पञ्चाक्षरः)

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥
सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।
स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥
कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।
प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

(इति विषमाक्षराः)

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।
किं प्रश्नाक्षेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥

(इत्येकाक्षरौ)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे अभिधेयवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥



नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाढ्यर्क्षा अव्यथिषा अव्यथिष्यौ निशाक्षिती ।
अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥
पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।
काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥
अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।
आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥
आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।
उदुम्बरो द्रुदेहल्योर्ना क्ली हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥
वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।
कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥
कर्णपूरो वतंसे ना क्ली सौगन्धिक उत्पले ।
काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥
शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।
नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥
जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।
जीवितेशः प्रेतनाथे दयिते द्रविणागमे ॥ ८ ॥
जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।
अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥
दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।
नारायणी शतावर्यां लक्ष्म्यां गौर्यां च ना हरौ ॥ १० ॥
निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।
निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥
निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।
निशाचर्यसती फेरू रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥
यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।
परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥
प्रतिष्कशः पुमान् दूते त्रिष्वग्रगसहाययोः ।
अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरक्ते व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।
पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥
नीचे व्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।
पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुष्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥
ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।
दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥
नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।
वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥
भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।
मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥
ओतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।
महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥
वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ प्रवरे हरौ ।
राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥
बारबाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।
विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥
विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।
वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥
शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।
पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥
सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

(इति चतुरक्षराः)

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥
पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।
नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥
मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।
हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्के ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।
तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥
द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।
धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरी ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।
ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ३० ॥
भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।
भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ३१ ॥
विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ३२ ॥
श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराम्नयोरपि ।
सरस्वती सरिद्भेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ३३ ॥
मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

(इति विषमसङ्ख्याः)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ३४ ॥
ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।
स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ३५ ॥
गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

(इति विषमाक्षराः)

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ३६ ॥
द्युपश्विष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दृक्षु गौर्न षण् ।
दृक् स्त्री स्याद्दर्शने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ३७ ॥
स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।
गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न क्ली धनरुक्मयोः ॥ ३८ ॥
आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।
तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥
सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ई ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

धातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।
तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥
गुग्गुलूलूककुटजेष्विन्द्रस्याग्नेश्च चित्रके ।
भल्लातकेऽप्यथार्कस्य भल्लातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥
कर्पूरकम्पिल्लकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।
गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥
खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।
भुवो नामानि सौराष्ट्र्यां शैलेये ग्रावशैलयोः ॥ ४ ॥
शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।
ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासभहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वादिवेश्मसु ।
हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥
स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिह्लके ।
स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥
वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।
कुष्ठाख्यभेषजे व्याधेर्मातुर्गौर्या दृषद्गवोः ॥ ८ ॥
पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।
अपराधे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥
रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।
उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥
रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।
षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥
माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।
त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पत्रे क्ली किंशुके नरः ॥ १२ ॥
गणस्याब्धेश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।
मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥
सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीननमेषविषाणिनाम् ।
मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।
सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विषसर्पयोः ॥ १५ ॥

अगरुण्ययसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसेः ।
शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥

धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।
इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥

वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।
वीरात् परास्ते भल्लाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥

पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।
मुनेः पलाशसरलस्योनाकेङ्गुद्यगस्तिषु ॥ १९ ॥

नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।
व्याघाते राजतो दीपाद्दीपमालाविधारके ॥ २० ॥

नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।
तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितार्क्ष्ययोः ॥ २१ ॥

पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।
कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥

नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।
कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥

एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।
पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥

स्वयमूह्या यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यव्ययान्यतः ।
आङीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥
आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।
ऐ दुःखभावने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥
ओं स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽम्भसि मूर्ध्नि च ।
प्रश्ने क्षेपे विल्कपे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥

चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।
तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥
धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावनिकामयोः ।
नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥
प्रश्ने विकल्पे नु स्विच्च प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।
वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥

समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।
स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥
समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।
प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगर्तिषु ॥ ८ ॥
हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावववधारणे ।
आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥

उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।
अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥
तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।
ह हन्तु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥
(इत्येकाक्षराः)

अमा सहार्थे सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।
अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥
पीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।
अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥
अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।
अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।
पश्चाद्धेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥
लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।
अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥
इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।
विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुरर्युररी यथा ॥ १७ ॥
उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।
समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥
पादपूरणकृच्चायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।
कच्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥
निषेधे वागलङ्कारे ज्ञीप्सनेऽनुनये खलु ।
तूष्णीमर्थे सुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥
तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।
तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥
तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥
नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥
पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्ताववधारणे ।
प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥
भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।
भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥
परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।
तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥
मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।
यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥
यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।
वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥
सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।
स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥
साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।
वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविषादयोः ॥ ३० ॥
(इति द्व्यक्षराः)

अञ्जसा त्वरिते तत्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।
समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥
रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।
परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेद्युः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥
पुरस्तात् पूर्वदिश्यग्रे पुराप्रथमयोरपि ।
शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥
सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३½ ॥
(इति त्र्यक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे झटिति स्राग्द्राक् मङ्क्ष्वह्नाय सपद्यपि ।
चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥

विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।
सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे है भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥
वौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्वाक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।
परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥

किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।
पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणर्ते च वर्जने ॥ ४ ॥
कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।
यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥

शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।
द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृतेः ॥ ६ ॥
कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।
दोषा नक्तं च निश्यह्नि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥

अपरेऽह्न्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वेतराधरे ।
उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तकर्योः पूर्वेद्युरादयः ॥ ८ ॥

उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वह्नि परेद्यवि ।
ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥
सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।
अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुदेषमः ॥ १० ॥

अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।
मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽग्रतः ॥ ११ ॥
सङ्कोचे चिच्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।
किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥

निष्षमं दुष्षमं दुष्ठु गर्ह्ये सुष्ठु सु शोभने ।
मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थे तु यथातथम् ॥ १३ ॥
मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।
युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीका समया निकषा हिरुक् ।
साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥

प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।
अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥

समकं तु सजूः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।
सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥

हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।
प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥

उपरिष्टादुपर्यूर्ध्वे स्यादधस्तादवागधः ।
तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥

प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥

अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।
इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।
सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥
अबाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।
एकस्वरं हलादीदूद् ङ्ङ् मा श्रीर्भूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥
इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरज्ज्वादि किञ्चन ।
नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥
णचोऽञि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।
अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥
क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्विबन्ताः सम्पदादयः ।
इञि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥
क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाक्षवाद्या घञस्तु ञे ।
क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ङ्याबूङ्द्यन्धतादयः ॥ ६ ॥
अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोलूकिकादयः ।
क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥
त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहरार्थकद्विगौ ।
त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

(इति स्त्रीलिङ्गाः)

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।
षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥
इदन्नेष्वरतिर्वर्मिर्वर्णिर्व्रीहिर्म्रीहिः प्रहिः ।
स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥
अङ्ग्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहित्तरत्तथा ।
शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥
कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।
इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥
अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।
प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमथ्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥
प्रश्नाद्या नङि पाकाद्या घञि ल्यौ नन्दनादयः ।
प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

(इति पुंलिङ्गाः)

त्रान्तद्वयच्कासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।
अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥
ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यश्छन्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।
स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥
समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।
सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥
एकद्वन्द्वाव्ययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।
अनञ्तत्पुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥
यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।
छाया यथा खगच्छायं नृपामत्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥
अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।
न काष्ठादेरशालार्थो सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥
उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।
पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥
शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।
एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥
कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।
नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

(इति नपुंसकलिङ्गाः)

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्थो विना त्विह ।
स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ष्वुन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥
क्वचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।
सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥
कलम्बी शल्लकी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।
शाटी रेणुहरेणूरुजलूकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥
उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रयिरञ्जलिः ।
कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्खोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

(इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः)

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृक्लीबलिङ्गकम् ।
तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः।
अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः॥ २९॥

पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः।
विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे॥ ३०॥

क्ष्वेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः।
सक्तुः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः॥ ३१॥

(इति नृषण्डाः)

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽश्सन्तिका स्थली।
शरव्यार्च्चिर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका॥ ३२॥

सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते।
मद्ये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये॥ ३३॥

अनञ्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा।
नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा॥ ३४॥

नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः।
साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वुञ्ष्यञोः॥ ३५॥

द्विगुरन्नन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते।
यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि॥ ३६॥

(इति स्त्रीषण्डाः)

त्रिलिङ्ग्यां तु क्वचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी।
पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी॥ ३७॥

अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी।
मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जृम्भा हरीतकी॥ ३८॥

त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम्।

(इति त्रिलिङ्गाः)

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं ब्रुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः॥ ३९॥

येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम्।
न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः॥ ४०॥

भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम्।
अतन्त्रीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः॥ ४१॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः।
मचर्चिका मतल्लिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ॥ ४२॥

अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि।
योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि॥ ४३॥

मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः।
आचार्यर्त्विग्गुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा॥ ४४॥

शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः।
अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा॥ ४५॥

भट्टारको भट्टरको भट्टस्तत्रभवान् भवान्।
भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा॥ ४६॥

शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु।
वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम्॥ ४७॥

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके।
सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना॥ ४८॥

तद्धिताः चतुरर्थ्यां ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः।
षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत्॥ ४९॥

(इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः)

कृत्तद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि।
तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा॥ ५०॥

द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडवौ नरि।
तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः॥ ५१॥

क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धान्ना पञ्चखार्यना।
त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुस्त्रिषु॥ ५२॥

प्रादिप्राप्तालमापन्नात् परं च प्रवरो यथा।
प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ॥ ५३॥

ग्राम्यानेकशफाबालबहुपश्वन्वये स्त्रियः।
क्ल्यक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत्॥ ५४॥

परवद् वानुवादेषु तिङव्ययमलिङ्गकम्।
अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः॥ ५५॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।
बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥
यवश्च व्रीहयो व्रीहिरित्यथ स्याद्द् विशाखयोः ।
द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥
अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।
सङ्ख्यार्थस्याबहुव्रीहेर्यथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥
विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।

(इति सामान्यन्यायाः)

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥
न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ५९३ ॥

इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविदेन दिनमणिसमतेजसा सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः
प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।
व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्
सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥

एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-
र्मूर्तस्वरूपैरिव नाममालाम् ।
धत्तां विशाले हृदये मुरारि-
स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥

एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः
सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।
संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां
प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥

[नानाविद्यावेद्यवाग्रत्नमाला
मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।
रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं
प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥]

(इति वैजयन्ती समाप्ता)

परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः	काण्डाद्यङ्काः	कोशान्तरस्थशब्दाः	कोशान्तरनामानि	स्थलनिर्देशाः
भिदुरम्	१।२।१३	भिदिरम्	अमरकोषः (व्याख्यासुधा)	१।१।४७
क्रकरः, क्रकरः	२।३।३६	क्रकरः, क्रकणः	„	२।५।९
मद्दलः	२।४।१०	मर्दलः	„ (व्याख्यासुधा)	१।७।८
दशती	२।४।१८	उषनी	„ „	१।७।८
फणिर्जकः	३।३।१२०	फणिज्झकः	„	२।४।७९
पिण्या	३।३।१४०	पण्या	„	२।४।१५०
बिम्बोष्ठी	३।३।१४७	बिम्बिका	„	२।४।१३९
वार्ध्राणसः	३।४।८	वार्ध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः	२।५।३
		वाध्रीनसः	„	२।५।३
नैचिकी	३।४।४६	नैचिकम्	„	२।९।२२
स्थूरी	३।४।५६	स्थौरी	अमरकोषः	२।८।४६
कुक्कुरः	३।४।६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।३४५
		कुर्कुरः	„	४।३४५
कदलिका	३।६।३१	कलिन्दिका	„	२।१७२
		कडिन्दिका	„ (मणिप्रभा)	२।१७२
		कलन्दिका	„ „	२।१७२
वैष्णुतम्	३।६।९५	वेष्टुतम्	„	३।५०१
		वेष्टुभम्	त्रिकाण्डशेषः	२।७।७
ब्रसी	३।६।१४९	बृषी	अमरकोषः	२।७।४६
		वृसी	„ (व्याख्यासुधा)	२।७।४६
क्रियदेतिका	३।६।१३६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः (व्याख्या)	१।७।४
चूषा	३।७।८४	दूष्या	अमरकोषः	२।८।४२
जागरः	३।७।१५३	जगरः	अभिधानचिन्तामणिः	३।४३०
		जगरः	अभिधानरत्नमाला	२।३०४
भिण्डिपालः	३।७।१६६	भिन्दिपालः	अमरकोषः	३।८।९१
		„	अभिधानचिन्तामणिः	३।४४९

वैजयन्तीस्थशब्दाः	काण्डाद्यङ्काः	कोषान्तरस्थशब्दाः	कोषान्तरनामानि	स्थलनिर्देशाः
समिकम्	३।७।२०३	समीकम्	अमरकोषः	२।८।१०४
खले पाली	३।८।३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः	३।५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३।८।३८	मकुष्टक-मयुष्ठकौ	„	४।२४०
			अमरकोषः	२।९।१७
विडङ्गः	३।८।९७	विटङ्कम्	„	२।२।१५
यष्टिमधुका	३।८।१०३	यष्टीमधुकम्	„	२।४।१०९
		मधुयष्टी	„ (व्याख्यासुधा)	२।४।१०९
		यष्टी	„	
मणिमन् शितशिवम्	३।८।१२०	शीतशिवं माणिमन्थम्	„	२।९।४२
		सितशिवम्	„ (व्याख्यासुधा)	२।९।४२
		माणिबन्धम्	„ (क्षीरस्वामी)	२।९।४२
मूका	३।९।१७	मूषा	„	२।१०।३३
कुठारः	३।९।३२	कुठरः, कुटरः	„	२।९।७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।८९
कल्करवम्	३।९।८५	कहलरवम्	„	२।२२०
निकार्यं	४।३।१८	निकाय्यः	अमरकोषः	२।२।५
		निकायः	„	२।२।५
		निकाय्यः	अभिधानचिन्तामणिः	४।५६
कुण्डिनी	४।३।२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः	२।९।६
मण्टपः	४।३।२८	मण्डपः	अमरकोषः	२।२।९
		„	अभिधानचिन्तामणिः	४।६९
भिस्सिटा	४।३।७७	भिस्सटा	„	३।६०
		„	अमरकोषः	२।९।४९
मकुटः	४।३।१३५	मुकुटः	„	२।६।२०२
		मुकुटः	„ (व्याख्यासुधा)	२।६।२०२
		„	अभिधानचिन्तामणिः	३।३१४
		मुकुटः	„ (स्वोपज्ञवृत्तिः)	३।३१४
पिचिण्डिका	४।४।५८	पिचण्डिका	„	२।२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः	काण्डाद्यङ्काः	कोषान्तरस्थशब्दाः	कोषान्तरनामानि	स्थलनिर्देशाः
प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	,,	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	,,	२।६।६५
		गोदः	,, (मणिप्रभा)	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	,,	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	,,	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	,,	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	,,	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्वार्यः	,, (व्याख्यासुधा)	३।१।१२

वैजयन्तीकोषस्य

शब्दानुक्रमणिका

[इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क (१. पुंलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, ब. = बहुवचन तथा ( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं]।

आ

ऊ

ऋ

ए

ल

ष

स

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी।** सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।

२. **वैजयन्तीकोषः** (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः** (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत।** हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

५. **कालिकापुराणम्** (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.** Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

7. **Kāvya-prakāśa** of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya). An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstrī **Part I** Principle, Technique and History of Literary Criticism. **Part II** The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

८. **भास्करोदया।** तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्या:) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

९. **तिलकमञ्जरी।** श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

१०. **काव्यमाला।** सम्पादक-पं॰ दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्ब तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** डॉ॰ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

Mahākavi Pravarasena's

सेतुबन्धम्

Setubandham

Text with Hindi & English Translation

Dr. Asha Kumari

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynesty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthets be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annoted bilingual translation was the main force behing presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.

शाखा :

चौखम्भा बुक्स

Chaukhambha Books

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)